संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

हिन्दी

मूल्य : ₹ ६
प्रकाशन दिनांक :
१ जुलाई २०१४
वर्ष : २४ अंक : १
(निरंतर अंक : २५९)

पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

बड़े धनभागी हैं वे सत्शिष्य जो तितिक्षाओं को सहने के बाद भी अपने सद्गुरु के ज्ञान और भारतीय संस्कृति के दिव्य कणों को दूर-दूर तक फैलाकर मानव-मन पर व्याप्त अंधकार को नष्ट करते रहते हैं । ऐसे सत्शिष्यों को शास्त्रों में पृथ्वी पर के देव कहा जाता है ।

– पूज्य बापूजी

अविरत बह रही है जनहित की गंगा

सद्गुरु पकड़ाते ज्ञान की डोरी, करते भव से पार

(पढ़ें पृष्ठ २४)

गुरु शुकदेवजी के श्रीचरणों में राजा परीक्षित
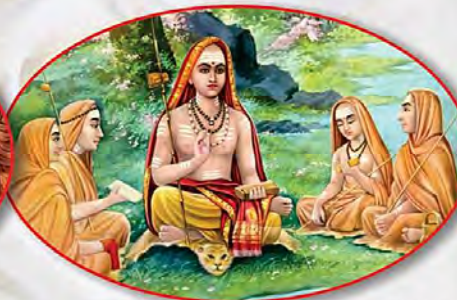
गुरु आद्य शंकराचार्यजी के श्रीचरणों में उनके सत्शिष्य

सद्गुरु साँईं श्री लीलाशाहजी के श्रीचरणों में पूज्य बापूजी

विभिन्न सेवाकार्यों में रत 'युवा सेवा संघ' के युवक

अहमदाबाद में टोपी-वितरण

दिल्ली

रोहतक (हरि.) में शरबत व सुप्रचार सामग्री वितरण

मालेगाँव, जि. नासिक में छाछ-वितरण

'महिला उत्थान मंडल' द्वारा आयोजित महिला सर्वांगीण विकास शिविर

धुलिया (महा.)

प्रकाशा (महा.)

लखनऊ

दसों दिशाओं में मंगल करनेवाली व सत्य का संदेश फैलाती प्रभातफेरियाँ

इंदौर

जोधपुर (राज.)

सोलन (हि.प्र.)

गाजियाबाद (उ.प्र.)

भोपाल

आमेट (राज.)

दिल्ली

नागपुर

मुजफ्फरपुर (बिहार)

गोरेगाँव-मुंबई

रायपुर (छ.ग.)

खड़गपुर (प. बंगाल)

जनहित में निरंतर चल रही है निःशुल्क शरबत व छाछ वितरण सेवा

लोनी, जि. गाजियाबाद

जम्मू

छिंदवाड़ा (म.प्र.)

फरीदाबाद (हरि.)

रायपुर

दयाला चक, जि. कठुआ (जम्मू-कश्मीर) में संत-सम्मेलन

गिरनार, जि. जूनागढ़ (गुज.) में साधु-संतों में भंडारा व दक्षिणा-वितरण

जंतर-मंतर, दिल्ली में धरने का ३०१वाँ दिन

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, उड़िया, तेलुगू, कन्नड़, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी देवनागरी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २४ अंक : १
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २५९)
प्रकाशन दिनांक : १ जुलाई २०१४
मूल्य : ₹ ६
आषाढ़-श्रावण वि.सं. २०७१

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक :
श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे. खो. मकवाणा, श्रीनिवास
संरक्षक : श्री जमनालाल हलाटवाला
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद -३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफैक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५.

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में

(१) वार्षिक : ₹ ६०/-
(२) द्विवार्षिक : ₹ १००/-
(३) पंचवार्षिक : ₹ २२५/-
(४) आजीवन : ₹ ५००/-

नेपाल, भूटान व पाकिस्तान में (सभी भाषाएँ)

(१) वार्षिक : ₹ ३००/-
(२) द्विवार्षिक : ₹ ६००/-
(३) पंचवार्षिक : ₹ १५००/-

अन्य देशों में

(१) वार्षिक : US $ २०
(२) द्विवार्षिक : US $ ४०
(३) पंचवार्षिक : US $ ८०

ऋषि प्रसाद (अंग्रेजी)

	वार्षिक	द्विवार्षिक	पंचवार्षिक
भारत में	७०	१३५	३२५
अन्य देशों में	US $ 20	US $ 40	US $ 80

सम्पर्क

'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.).
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८.
e-mail: ashramindia@ashram.org
web-site: www.rishiprasad.org
www. ashram.org

ॐ ॐ ॐ इस अंक में ॐ ॐ ॐ

संकल्प की दुनिया

- पूज्य बापूजी

जितना कोई अच्छा काम करता है, उतना करनेवाले का हृदय अच्छा होकर उसके भाग्य की रेखाएँ बदलती हैं, बुद्धि में परमात्मा के ज्ञान की और प्रेरणा की धारा विकसित होती है। बुरा कर्म करने से बुद्धि गलत निर्णय करनेवाली बनती है। अच्छा कर्म करनेवाले की बुद्धि भगवान ऊँची बना देते हैं। ऐसा नहीं कि उधर सातवें अरस में बैठकर कोई तुम्हारा खाता लिखता है।

सब अपने संकल्पों से, विचारों से तुच्छ होते हैं या महान होते हैं। हलके विचार हलके कर्म कराके आदमी को तुच्छ बना देते हैं। ऊँचे विचार ऊँचे कर्म कराके आदमी को ऊँचा बना देते हैं। और यदि कर्म ईश्वरप्राप्ति के लिए करें तो ईश्वर मिल जाता है।

जेहि कें जेहि पर सत्य सनेहू।
सो तेहि मिलइ न कछु संदेहू ॥
(श्री रामचरित. बा.कां. : २५८.३)

जिसको जिस पर सत्य स्नेह होता है, वह उसको मिल जाता है, वह स्थिति मिल जाती है।

गांधीजी ने राजा हरिश्चन्द्र का नाटक देखकर संकल्प किया कि 'मैं सत्य बोलूँगा और परहितकारी जीवन

जीऊँगा।' गांधीजी के एक ऊँचे संकल्प ने ४० करोड़ हिन्दुस्तानियों को आजाद करा दिया और वे 'महात्मा गांधी' बन गये।

हमारा संकल्प था कि हम ईश्वर को पायेंगे तो हमारे द्वारा भी भगवान करोड़ों लोगों को सत्संग दिलाते हैं। एक छोटा-सा संकल्प कितना कल्याण कर सकता है ! इसलिए अच्छे विचार करनेवाला आदमी खुद तो ऊँचाई को छूता है, दूसरों को भी ऊँचा उठाता है और हलके विचार करनेवाला खुद तो डूब मरता है, दूसरों को भी गिराता है। रावण का हलका संकल्प, खुद को परेशान किया, पूरी लंका नाश कर दी। रामजी का ऊँचा संकल्प, खुद भी ब्रह्मसुख में और अयोध्यावासियों को भी वैकुंठ के सुख में पहुँचा दिया। श्रीकृष्ण का मधुमय संकल्प, खुद तो मधुमय बंसी बजाते रहे, दूसरों को भी आनंद देते रहे। कंस का अहंकारवाला संकल्प, खुद जरा-जरा बात में डरा और दूसरों को भी डराया और अंत में अकाल मृत्यु को प्राप्त हो गया। इसलिए अच्छे संकल्प, अच्छे कर्म अपना और दूसरों का भला करते हैं तथा बुरे संकल्प, बुरे कर्म अपना और दूसरों का नुकसान करते हैं।

मन से जैसे संकल्प उठते हैं, वैसा भविष्य में होता जाता है। झूठ-मूठ में भी किये गये शुभ संकल्प धीरे-धीरे पक्के होते जाते हैं और सत्य होने लगते हैं। इसलिए हमेशा मन से शुभ संकल्प ही करने चाहिए।

आपके मन में अथाह सामर्थ्य है। आप जैसा संकल्प करते हो, समय पाकर वैसा ही वातावरण निर्मित हो जाता है। अब उठो... कमर कसो ! जैसा बनना है, वैसा अभी से संकल्प करो और बनने-बिगड़ने से बचना है तो अपने आत्मस्वभाव को जानने का संकल्प करो।

शुभ संकल्प करे और उसमें लगा रहे तो देर-सवेर वह सफलता के सिंहासन पर पहुँच जाता है और यदि परमात्मा को पाने का संकल्प करे तो अपने परमात्मप्राप्तिरूपी लक्ष्य को प्राप्त कर ही लेता है। वह अविनाशी पद को पाकर मुक्त हो जाता है।

पॉक्सो एक्ट का दुरुपयोग रोको

जालंधर (पंजाब) के 'हिन्दू यूनाइटेड फ्रंट' नामक संगठन ने 'पॉक्सो एक्ट' के दुरुपयोग तथा हिन्दू संतों पर हो रहे अबाध अत्याचार के खिलाफ संगोष्ठी (सेमिनार) का आयोजन किया। इसमें सभा के अध्यक्ष श्री मुरारीलालजी ने कहा :

''दिल्ली में दामिनी प्रकरण के बाद संशोधित यौन-उत्पीड़न कानून एवं 'पॉक्सो एक्ट' का लोगों को फँसाने के लिए दुरुपयोग हो रहा है। इसके तहत संत श्री आशारामजी बापू सहित देश के कई प्रतिष्ठित व्यक्तियों को निशाना बनाया जा रहा है।''

संगठन के संयोजक श्री लवलीनजी ने कहा : ''आज हिन्दू संतों को सताया जाना हिन्दू संस्कृति का अनादर है। भारत में सबसे ज्यादा संतों को ही सताया जा रहा है। संत श्री आशारामजी बापू व श्री नारायण साँईं को अब जमानत मिल जानी चाहिए।''

'हिन्दू यूनाइटेड फ्रंट' ने संत श्री आशारामजी बापू व श्री नारायण साँईं को शीघ्र ही रिहा करने की माँग की है। (संदर्भ : 'दैनिक भास्कर', पंजाब एवं 'जालंधर सवेरा टाइम्स' से)

अनोखी गुरुदक्षिणा
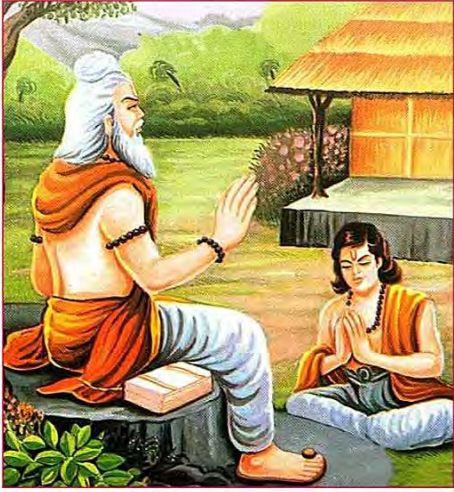
महर्षि अगस्त्यजी के शिष्य सुतीक्ष्ण गुरु-आश्रम में रहकर अध्ययन करते थे। विद्याध्ययन समाप्त होने पर एक दिन गुरुजी ने कहा : ''बेटा ! तुम्हारा अध्ययन समाप्त हुआ। अब तुम विदा हो सकते हो।''

सुतीक्ष्ण ने कहा : ''गुरुदेव ! विद्याध्ययन के बाद गुरुजी को गुरुदक्षिणा देनी चाहिए। अतः आप कुछ आज्ञा करें।''

''बेटा ! तुमने मेरी बहुत सेवा की है। सेवा से बढ़कर कोई भी गुरुदक्षिणा नहीं। अतः जाओ, सुखपूर्वक रहो।''

सुतीक्ष्ण ने आग्रहपूर्वक कहा : ''गुरुदेव ! बिना गुरुदक्षिणा दिये शिष्य को विद्या फलीभूत नहीं होती। सेवा तो मेरा धर्म ही है, आप किसी अत्यंत प्रिय वस्तु के लिए आज्ञा अवश्य करें।''

गुरुजी ने देखा कि सुदृढ़ निष्ठावान शिष्य मिला है तो हो जाय कुछ कसौटी। गुरुजी ने कहा : ''अच्छा, देना ही चाहता है तो गुरुदक्षिणा में सीतारामजी को साक्षात् ला दे।''

सुतीक्ष्ण गुरुजी के चरणों में प्रणाम करके जंगल की ओर चल दिया और वहाँ जाकर घोर तपस्या करने लगा। वह पूरे मन एवं हृदय से गुरुमंत्र के जप, भगवन्नाम के कीर्तन एवं ध्यान में तल्लीन रहने लगा। जैसे-जैसे समय बीतता गया, सुतीक्ष्ण के धैर्य, समता और गुरु-वचन के प्रति निष्ठा और अडिगता में बढ़ोतरी होती गयी।

कुछ समय पश्चात् भगवान माँ सीतासहित वहाँ पहुँचे जहाँ सुतीक्ष्ण ध्यान में तल्लीन होकर बैठा था। प्रभु ने आकर उसके शरीर को हिलाया-डुलाया पर उसे कोई होश नहीं था। तब रामजी ने उसके हृदय में अपना चतुर्भुजीरूप दिखाया तो उसने झट्-से आँखें खोल दीं और श्रीरामजी को दंडवत् प्रणाम किया। भगवान श्रीरामचन्द्रजी ने उसे अविरल भक्ति का वरदान दिया। सुतीक्ष्ण गुरुजी को गुरुदक्षिणा देने हेतु सीतारामजी को लेकर गुरु-आश्रम की ओर निकल पड़ा।

महर्षि अगस्त्य के आश्रम में जाकर श्रीरामजी एवं सीता माता उनकी आज्ञा की प्रतीक्षा में बाहर खड़े हो गये। परंतु सुतीक्ष्ण को तो आज्ञा लेनी नहीं थी, उसने तुरंत अंदर जाकर गुरुचरणों में साष्टांग दंडवत् करके सरल, विनम्र भाव से कहा : ''गुरुदेव ! मैं गुरुदक्षिणा देने आया हूँ। सीतारामजी द्वार पर खड़े आपकी आज्ञा की प्रतीक्षा कर रहे हैं।''

अगस्त्यजी का हृदय शिष्य के प्रति बरस पड़ा। गुरु की कसौटी में शिष्य उत्तीर्ण हो गया था। पूर्ण गुरु को पूर्ण कृपा बरसाने के लिए पात्र मिल गया था। उन्होंने शिष्य को गले लगाया और अपना पूर्ण गुरुकृपा का अमृतकुम्भ शिष्य के हृदय में उँड़ेल दिया। अगस्त्यजी सुतीक्ष्ण को साथ लेकर बाहर आये और श्रीरामचन्द्रजी व सीता माता का स्वागत-पूजन किया।

धन्य हैं सुतीक्ष्णजी जिन्होंने गुरुआज्ञा-पालन में तत्पर होकर गुरुदक्षिणा में भगवान को ही ला के अपने गुरु के द्वार पर खड़ा कर दिया ! जो दृढ़ता, तत्परता और ईमानदारी से गुरुआज्ञा-पालन में लग जाता है, उसके लिए प्रकृति भी अनुकूल बन जाती है; और-तो-और भगवान भी उसके संकल्प को पूरा करने में सहयोगी बन जाते हैं। धन्य हैं ऐसे शिष्य जो धैर्य, तितिक्षा एवं सुदृढ़ गुरुनिष्ठा का परिचय देते हुए तत्परता से गुरुकार्य में लगे रहते हैं और आखिर गुरु की पूर्ण प्रसन्नता, पूर्ण संतोष एवं पूर्ण कृपा को पाकर जीवन का पूर्ण फल प्राप्त कर लेते हैं !

भगवदीय आनंद जगानेवाला श्रीकृष्णावतार

- पूज्य बापूजी

वास्तव में भगवान सच्चिदानंद हैं। 'सत्' हैं माना सदा रहते हैं, प्रलय के बाद भी रहते हैं। 'चेतन' हैं अर्थात् सबकी बुद्धियों में अपनी चेतना और प्रकाश देते हैं और भगवान 'आनंदस्वरूप' हैं। जहाँ मर्यादा और सत्य की जरूरत पड़ती है, वहाँ रामावतार लेकर भगवान अवतरित होते हैं और जहाँ ज्ञान की जरूरत पड़ती है, वहाँ कपिल मुनि और दत्तात्रेयजी अर्थात् ऋषि अवतार होते हैं लेकिन जहाँ प्रेम व माधुर्य की जरूरत पड़ती है, वहाँ श्रीकृष्ण अवतार होता है। जिस किसीको अपनी तरफ आकर्षित, आनंदित करनेवाले का नाम कृष्ण है।

कर्षति आकर्षति इति कृष्णः।

श्रीकृष्ण प्रेममूर्ति हैं और श्रीकृष्ण का धर्म है आनंद। दुःखी, चिंतित, भयभीत व समाज में शोषित सभी मनुष्यों को शांति और आनंद की आवश्यकता है। श्रीकृष्ण और श्रीकृष्ण-तत्त्व में जगे हुए महापुरुष सभीको आनंदित करते हैं। भगवान कृष्ण मक्खन-मिश्री देकर भी आनंद देते हैं तो कोई महापुरुष गुरु-प्रसाद देकर भी आनंद बरसाते हैं।

जीव में गुण भी होते हैं और दोष भी होते हैं, अशांति भी होती है, दुःख भी होता है लेकिन महापुरुष और भगवान के दर्शन-सत्संग से, भगवान की लीला से, महापुरुषों की चेष्टा से जीव के दोष मिटने लगते हैं, चित्त में भक्ति, प्रसन्नता और आनंद आने लगता है। आपके हृदय में सच्चिदानंद का 'आनंदस्वभाव' प्रकट करने के लिए, अंतरात्मा के आनंद को जगाने के लिए ही श्रीकृष्ण अवतार और संत-सान्निध्य है।

प्रेम की बोली का नाम गीत है और प्रेम की चाल का नाम नृत्य है। जीवन केवल आपाधापी करने के लिए नहीं है, जीवन नृत्य के लिए भी है, गीत के लिए भी है, आनंद-आह्लाद के लिए भी है, विश्रांति के लिए भी है और विश्रांति के मूल को जानकर मुक्त होने के लिए भी है। जीवन का सर्वांगीण विकास होना चाहिए। श्रीकृष्ण के जीवन में वह भी है।

भगवान बँध जाते हैं तो भी हँस रहे हैं। भागना पड़ता है तो भाग भी लेते हैं लेकिन अंदर से कायरता नहीं। युद्ध करना पड़ता है तो कर लेते हैं लेकिन क्रूरता नहीं।

मैया को कहते हैं : ''माँ-माँ ! मक्खन लाओ।''

''अभी दोपहर को मक्खन नहीं खाते।''

''तो कब खाते हैं ?''

''सुबह।''

''तो अब क्या ?''

''शाम होगी तो दूध पियेंगे।''

ङ‘तो माँ दूध दे दो।''

''अरे, अभी दोपहर है।''

''माँ ! आँखें बंद करके देखो, संध्या हो गयी न ! माँ ! देखो रात हो गयी।'' इस प्रकार माँ को मधुरता देते हैं, भला उनको दूध की क्या जरूरत है !

भगवान सत्‌स्वरूप हैं, चेतनस्वरूप हैं और आनंदस्वरूप हैं तो उनके आनंदस्वभाव को जगाओ। दुःखी, अतृप्त, अशांत और धोखेबाज संसार में एक भगवद्‌रस ही दुर्गुणों को दूर करेगा। आप अंदर में भगवान को स्नेह करो। अपने को खराब-अच्छा नहीं, अपने को चैतन्य मानो। अपने को भगवान का और भगवान को अपना मानो। ऐसा करके अपना आत्मरस जगाओ।

दुःख से, धोखे से, चिंता से भरी हुई सृष्टि में आत्म-मधुरता का स्वाद चखानेवाले अवतार का नाम है कृष्ण अवतार।

आप ऐसा मत समझना कि श्रीकृष्ण के जीवन में रसिया गीत, बंसी व नाच-गान ही थे। रसिया गीत और बंसी वाले श्रीकृष्ण के जीवन में ज्ञान की गम्भीरता, योग की ऊँचाई, कर्म की निष्ठा और नैष्कर्म्यता की पराकाष्ठा भी थी।

मनुष्य के जीवन में जितनी भी मुसीबतें और कठिनाइयाँ आ सकती हैं, उससे भी ज्यादा कठिनाइयाँ इस प्रेमावतार के जीवन में थीं। और कोई होता तो दुःख से रो-रो के मरे और फिर दूसरे जन्म में भी वही दुःख रोये, इतना दुःख श्रीकृष्ण के जीवन में था। लेकिन कभी सिर पकड़ के उदास नहीं हुए, कभी फरियाद नहीं की। श्रीकृष्ण के जन्म के निमित्त ही माँ-बाप को जेल जाना पड़ा। उनके जन्म से पहले ६ भाइयों को मौत के घाट उतरना पड़ा। जन्मे तो जेल में और जन्मते ही पराये घर ले जाये गये, ऐसा भयावह जीवन ! आपको तो जन्मते ही टोकरी में कोई उठाकर नहीं ले जाता है, शुक्र करो। इतना बड़ा भारी दुःख तुम्हारे इष्ट को मिला तो भी मुस्कराते रहे तो तुम काहे को रोते हो ?

बोले, 'क्या करें ? मेरी नौकरी चली गयी, मेरे धंधे में यह हो गया, वह हो गया...' अरे ! जन्मते ही भाँजे के पीछे मामा कंस व पूरी राजसत्ता लग गयी, तब भी कृष्ण ने कभी नहीं कहा कि 'मेरा मामा कंस मेरे पीछे पड़ा है, मैं तो मर गया रे ! हाय रे !...' १७-१७ बार जरासंध को धूलि चटाकर भेजा लेकिन १८वीं बार जरासंध एकाग्र होकर कुछ तत्परता से आया तो श्रीकृष्ण को बलरामसहित भाग जाना पड़ा। ऐसा नहीं कि भगवान हैं तो सफल-ही-सफल होते रहें। भगवान हैं तो अपने-आपमें हैं और दूसरे में भी तो वे ही भगवान हैं। कभी कोई भगवान जीतता है, कभी कोई भगवान की सत्ता काम करती है।

श्रीकृष्ण अनुभवों के बड़े धनी हैं और गीता श्रीकृष्ण के अनुभवों की पोथी है। श्रीकृष्ण ने गीता में कहा : 'दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः...' दुःख में उद्विग्न मत हो, यह श्रीकृष्ण ने केवल बोला नहीं है, उनके जीवन में चम-चम चमकता है। 'सुखेषु विगतस्पृहः...' सुख में आसक्त न हो। पलकें बिछानेवाली गोपियाँ और ग्वालों ने, यशोदा, नंदबाबा आदि ने श्रीकृष्ण को कितना सुख दिया लेकिन जब व्रज छोड़ा तो मुड़कर देखा भी नहीं। सुख में स्पृहारहित !

तो आप भी जो हो गया सो हो गया, उसके पीछे अभी का वर्तमान व्यर्थ न करो। किसीने प्यार दिया तो दिया, कभी दुःख मिला तो मिला, ये आ-आ के जानेवाले हैं। भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं, 'तुम नित्यस्वरूप रहनेवाले हो, स्वस्थ हो जाओ, 'स्व' में स्थित हो जाओ।' सिर्फ कहते नहीं हैं, उनके जीवन में कदम-कदम पर, डगर-डगर पर ऐसा है।

जन्माष्टमी व्रत-उपवास की महिमा

- पूज्य बापूजी

(श्रीकृष्ण जन्माष्टमी : १७ अगस्त)

जन्माष्टमी का व्रत रखना चाहिए, बड़ा लाभ होता है। इससे सात जन्मों के पाप-ताप मिटते हैं। जन्माष्टमी एक तो उत्सव है, दूसरा महान पर्व है, तीसरा महान व्रत-उपवास और पावन दिन भी है।

'वायु पुराण' में और कई ग्रंथों में जन्माष्टमी के दिन की महिमा लिखी है। 'जो जन्माष्टमी की रात्रि को उत्सव के पहले अन्न खाता है, भोजन कर लेता है वह नराधम है' - ऐसा भी लिखा है। और जो उपवास करता है, जप-ध्यान करके उत्सव मना के फिर खाता है, वह अपने कुल की २१ पीढ़ियाँ तार लेता है और वह मनुष्य परमात्मा को साकार रूप में अथवा निराकार तत्त्व में पाने में सक्षमता की तरफ बहुत आगे बढ़ जाता है। इसका मतलब यह नहीं कि व्रत की महिमा सुनकर मधुमेहवाले या कमजोर लोग भी पूरा व्रत रखें। बालक, अति कमजोर तथा बूढ़े लोग अनुकूलता के अनुसार थोड़ा फल आदि खायें।

जन्माष्टमी के दिन किया हुआ जप अनंत गुना फल देता है। उसमें भी जन्माष्टमी की पूरी रात जागरण करके जप-ध्यान का विशेष महत्त्व है। जिसको क्लीं कृष्णाय नमः। मंत्र का थोड़ा जप करने को भी मिल जाय, उसके त्रिताप नष्ट होने में देर नहीं लगती। 'भविष्य पुराण' के अनुसार जन्माष्टमी का व्रत संसार में सुख-शांति और प्राणीवर्ग को रोगरहित जीवन देनेवाला, अकाल मृत्यु को टालनेवाला, गर्भपात के कष्टों से बचानेवाला तथा दुर्भाग्य और कलह को दूर भगानेवाला होता है।

भगवान श्रीकृष्ण के ६४ दिव्य गुण

(अंक २५४ से आगे)

भगवान का २५वाँ गुण है 'क्षमाशीलः', भगवान क्षमाशील हैं। २६वाँ गुण है 'गम्भीरः', भगवान गम्भीरों के भी गम्भीर हैं। उनकी आकृति और व्यवहार से उनके हृदयगत भाव को कोई नहीं जान सकता। २७वाँ गुण है 'धृतिमान्', भगवान धैर्यवानों में परम धैर्यवान हैं। २८वाँ गुण है 'समः', भगवान समदृष्टि हैं। उनका किसीके प्रति राग-द्वेष नहीं है, शत्रु-मित्र में उनकी समबुद्धि है। २९वाँ गुण है 'वदान्यः', भगवान बड़े उदार और दानवीर हैं। ३०वाँ गुण है 'धार्मिकः', भगवान धार्मिक हैं। स्वयं धर्मानुकूल आचरण करते हैं और दूसरों को भी वैसा ही आचरण करने की प्रेरणा देते हैं। ३१वाँ गुण है 'शूरः', भगवान शूरवीर हैं और ३२वाँ गुण है 'करुणः', भगवान में करुणा खूब है। वे परदुःखकातर एवं दयालु हैं। (क्रमशः)

जीव को शिव बनाते हैं सद्गुरु

- पूज्य बापूजी

एक बालक था मुकुंद। जब वह थोड़ा बड़ा हुआ तो गुरु महाराज की खोज के लिए इधर-उधर घूमा। हम भी घूमे थे इधर-उधर गुरु महाराज की खोज के लिए। तो गुरु की खोज में घूमते-घामते मुकुंद को मिल गये एक महापुरुष, गुरु महाराज युक्तेश्वर।

मुकुंद ने उनसे प्रार्थना की : ''गुरुदेव ! मुझे दूसरा कुछ नहीं चाहिए, मेरा जो अंतरात्मा-परमात्मा है उसका साक्षात्कार करना है। सुना है कि भगवान हैं लेकिन भगवान का जब तक साक्षात्कार नहीं होता, तब तक दुःख, चिंता नहीं मिटती, अहं नहीं मिटता और अहं को ही मान-अपमान की ठोकर लगती है, अहं ही भागता-भगाता है। तो मेरा अहं ले लो और मेरे को भगवान का दर्शन करा दो।''

युक्तेश्वर महाराज बोले : ''मेरी शर्त यह है कि जो मैं बोलूँ वही करना पड़ेगा। आज्ञा का पालन करेगा तो वासना मिटेगी और आज्ञा को ठुकरायेगा तो तू ठुकराया जायेगा। है ताकत ?''

''गुरु महाराज ! आपकी दया से होगा।''

''तो अच्छा ! अब जाओ कलकत्ता और महाविद्यालय में भर्ती हो जाओ।''

मुकुंद सोचने लगा कि 'यह तो मेरी इच्छा के विरुद्ध है। मैं तो सब छोड़ के गुरु महाराज के पास आया और गुरु महाराज बोलते हैं कि 'जाओ, महाविद्यालय में भर्ती हो जाओ।' अब गुरु की आज्ञा कैसे टालूँ ?' मन तो नहीं था जाने का लेकिन वह गया।

गुरु ने कहा था कि ''जाओ, महाविद्यालय में भर्ती हो जाओ और बीच-बीच में तुम मेरे पास आते रहोगे।'' जो गुरु ने कहा था वही हुआ। बीच-बीच में जब भी मौका मिलता, छुट्टियों में वह गुरुजी के पास आता रहा। गुरुजी ने उसे बहुत परखा। श्रीरामपुर आश्रम में उसे अलग-अलग सेवाएँ दी गयीं।

गुरु के यहाँ गुप्त (शाश्वत) धन लेना हो तो अपनी वासना, अहंकार और पकड़ - ये छोड़ना पड़ता है। सोने में से गहने तभी बनते हैं जब उनको आग में तपाया जायेगा। पुराना घाट छोड़ें तब नया घाट आये। ठोको, पीटो, तपाओ फिर बने गहना। ऐसे ही भगवान को पानेवाले को गुरुमुख बनने के लिए गुरुजी की कसौटी में, गुरुजी की आज्ञा में उत्तीर्ण होना पड़ता है।

एक दिन मुकुंद से मिलने उसके पिता आये और मन-ही-मन सोचने लगे कि 'मेरा बेटा जवानी में समर्पित हुआ है, बड़ा होशियार है। बचपन में ही भगवान से बातें करता था ! अब गुरु महाराज के पास रह रहा है तो वे बहुत खुश होंगे।' लेकिन गुरुजी ने एकदम उलटा सुनाया कि ''तेरा बेटा है कि गधा है ! मेरा तो सिर खपा गया...'' ऐसी बातें सुनायीं कि वह बाप तो रोने लग गया और मुकुंद को फटकारा कि ''गुरु महाराज तो तेरे पर इतने नाराज हैं ! तू ऊँधा काम करता है। सब छोड़ के इधर आया और तू तो भ्रष्ट हो गया। हम तो समझे थे गुरु महाराज के पास कुछ पायेगा लेकिन वे तो बोल रहे हैं कि ऐसा है, ऐसा है... तू किसी काम का नहीं रहा।''

मुकुंद मन से एकदम टूट गया लेकिन बाद में सामान्य हो गया।

एक बार मुकुंद के मन में हुआ कि 'हिमालय में जा के समाधि करूँगा...'

ऐसा सोचकर वह गुरुजी से बोला : ''मेरे को हिमालय जाने की आज्ञा दो। कृपा करो! मेरा मन कहता है कि मैं भाग जाऊँ लेकिन भाग जाने से तो मेरा सर्वनाश हो जायेगा।''

गुरुजी ने मुकुंद को समझाया और मौन हो गये।

मुकुंद ने मन में सोचा कि 'उधर ही बैठूँगा, ध्यान करूँगा, समाधि करूँगा, भगवान को पाऊँगा।'

उसने योगिराज रामगोपाल का नाम सुना था कि 'वे बड़े योगी हैं। उन्होंने २० साल तो एक जगह पर ध्यान-समाधि में बिताये थे। १८ घंटा रोज ध्यान करते थे २० साल तक। फिर २५ साल दूसरी जगह बिताये। ४५ साल की समाधि!'

वह उनके पास गया और बोला : ''गुरु महाराज! मेरे को ध्यान-समाधि सिखाओ। हिमालय के एकांत में आपकी शरण आया हूँ।''

''अरे, तू तो भटक रहा है। युक्तेश्वर महाराज को छोड़ के तू मेरे पास आया! मैंने ४५ साल झख मारी तो मेरे को कुछ नहीं मिला तो तेरे को क्या मिल जायेगा! समाधि में तो सुन्न-मुन्न होते हैं। इन जड़ पत्थरों में, हिमालय में अगर भगवान होते तो हिमालय में बहुत लोग रह रहे हैं तो क्या सबको भगवान मिल गये! गुरु की अवज्ञा करके, गुरु की इच्छा नहीं हुई तब भी तू इधर भटकता है! अब मैं तेरे को क्या सिखाऊँगा ? तू क्या सीख लेगा ?

गुरु महाराज तो व्यवहार में, उतार में, चढ़ाव में, हर तरीके से अहंकार व वासना को मिटाते हैं। प्रशंसा करके तो कोई भी उल्लू बना देगा लेकिन तुम्हारे गुरु तो सच्चे संत हैं। वे तुम्हारी वाहवाही करेंगे क्या ? कैसा पागल आदमी है! जो उन गुरु से, ऐसे युक्तेश्वर महाराज से नहीं सीखा, नहीं पाया तो मेरे पास क्या सीखेगा-पायेगा तू ?''

गया तो था बड़े उत्साह से लेकिन उसके दिमाग से हवा निकल गयी कि 'जड़ पहाड़ क्या दे देगा ? जो मिलेगा वह चेतन गुरु की हाजिरी में, ज्ञान में, सत्संग में, घड़ाई में...'

जैसे माई चावल बीनती है न, तो कंकड़-पत्थर, जीव-जंतु एक-एक को चुन-चुन के निकालती है, ऐसे ही छुपे हुए संस्कारों में क्या-क्या पड़ा है, भरा हुआ है, वह तो आत्मसाक्षात्कारी महापुरुष ही जानते हैं कि कैसे घड़ाई होती है।

योगिराज रामगोपाल ने कहा : ''जा, युक्तेश्वर महाराज के पास।''

कुछ दिनों के बाद मुकुंद वापस आ गया और सोचने लगा कि 'गुरु महाराज की आज्ञा नहीं थी और गया था और उन बड़े संत ने भी डाँट दिया। अब गुरुजी तो फटकारेंगे...'

गया और गुरु महाराज के आगे लम्बा पड़ने लगा तो गुरुजी ने पकड़ लिया, नीचे नहीं गिरने दिया और बोले : ''चल मुकुंद! झाडू उठा, उधर सफाई करनी है। फिर थोड़ा खाना है, अपन खा के फिर गंगा किनारे चलते हैं।''

मुकुंद तो सोचता ही रह गया कि 'मेरे को डाँटना-फटकारना कुछ भी नहीं! चरणों पर गिर रहा था माफी माँगने के लिए लेकिन गिरने भी नहीं दिया, बाहर से तो इतने कठोर लेकिन अंदर से कितने दयालु मेरे गुरु! कितने उदार हैं!'

ज्यों-ज्यों वर्ष बीतते गये, त्यों-त्यों उसे पता चला कि 'अरे, गुरु महाराज दुश्मन जैसे लगते हैं लेकिन इनके जैसा कोई मित्र नहीं है, कोई तारणहार नहीं है। संसार की मिठाइयाँ भी इनकी कृपा के आगे फीकी हैं।'

फिर तो 'गुरु महाराज जो भी करते हैं, भलाई के लिए करते हैं' - ऐसा उसे एक आश्रय मिल गया। फिर कभी भी वे डाँटते तो उसे अंदर में प्रसन्नता होती कि 'भीतर तरल थे बाहर कठोरा...'

एक दिन गुरुजी ने मुकुंद को बुलाया : ''क्या कर रहा है ?''

''गुरुजी! ध्यान कर रहा हूँ।''

''ध्यान में तो कर्तापन है, ध्यान क्या करता है! इधर आ।''

वह गया। तब युक्तेश्वर महाराज ने स्नेह से समझाते हुए कहा : ''ध्यान करूँ, ईश्वर मिल जाय...

जो नहीं करते हैं उनके लिए तो ध्यान ठीक है लेकिन गुरुजी मिल गये फिर जो गुरुजी बोलें वही किया करो।''

''जी महाराज !''

गुरु ने जरा-सा थपथपा दिया। मुकुंद को हुआ कि 'मैं तो मर गया और जिसको खोजता था वही रह गया।' गुरुजी ने ऐसा थपथपाया, ऐसा कुछ ध्यान लग गया, ऐसा कुछ हुआ कि अरे, जिसके लिए बड़े-बड़े लोग ६०-६० हजार वर्ष तपस्या करते हैं, झख मारते हैं तो भी नहीं मिलता, वह तो अपना आत्मा है, वही हरि है, हाजरा-हजूर है, उसका अनुभव गुरुकृपा से होने लगा।

जो दूर नहीं, दुर्लभ नहीं, परे नहीं, पराया नहीं वह तो अपना आत्मा है।

ब्राह्मी स्थिति प्राप्त कर, कार्य रहे ना शेष।
मोह कभी न ठग सके, इच्छा नहीं लवलेश॥
पूर्ण गुरु किरपा मिली, पूर्ण गुरु का ज्ञान।...

'इच्छा नहीं लवलेश...' जगत की इच्छा मिटाने के लिए भगवान को पाने की इच्छा थी लेकिन जब भगवान को खोजा तो वह तो अपना आत्मा ही है।

गुरु महाराज ने क्या पता कैसी कृपा की ! पर्दा हट गया तो लगा कि भगवान को क्या खोजना ! भगवान तो अपना आत्मा ही है। मुकुंद को पता चल गया कि गुरुकृपा हि केवलं...

मैं युक्तेश्वर बाबा को तो प्रणाम करूँगा हृदय से लेकिन उनकी इतनी कड़क, कठोर घुटाई-पिटाई सहनेवाला मुकुंद, जो परमहंस योगानंद बन गये, उनके लिए भी मेरे हृदय में बहुत स्नेह है।

इसलिए बोलते हैं कि हजार बार गंगा नहा लो, हजार एकादशी कर लो, अच्छा है, पुण्य होता है लेकिन सद्गुरु के सत्संग के आगे वह सब छोटा हो जाता है, गुरु की कृपा, गुरु का सत्संग सर्वोपरि है।

***

(पृष्ठ ११ से भारतीय संस्कृति ... का शेष) अश्लीलता के चौतरफा आक्रमणवाले इस युग में भी पूज्य बापूजी के सत्संग व सत्प्रेरणा से साधक ६-६ माह, वर्ष-वर्ष के ब्रह्मचर्य व्रत लेकर अपना जीवन बल-ओज से सम्पन्न बनाते हैं एवं सुंदर समाज के निर्माण में भी महान योगदान देते हैं। लेकिन विडम्बना की बात है कि लोक-मांगल्य के लिए, विश्व-कल्याण के लिए अपना पूरा जीवन न्योछावर कर देनेवाले इन महापुरुष पर ही झूठे, घृणित चारित्रिक आरोप लगाकर उनको पिछले १० महीनों से कारागृह में रखा गया है। इससे समाज व विश्व की बड़ी हानि होगी। इसलिए विश्व के मंगल के लिए विश्व के हितचिंतकों को एकजुट होकर इस घोर षड्यंत्र का पर्दाफाश करना चाहिए।

***

अपनी निष्ठा उस परमेश्वर में रखो

जैसे बेटा अंगारे के पास जाता है तो माँ उसे डाँटती है, मारती है । इसमें माँ का द्वेष नहीं है वरन् यह भी माँ की कृपा ही है । ऐसे ही माताओं की माता और पिताओं के पिता जो भगवान श्रीकृष्ण हैं उन्होंने गीता में १०८ गालियाँ दी हैं ताकि लोग मूर्खता छोड़ें ।

विमूढा नानुपश्यन्ति । नराधमा: । आसुरंभावमाश्रिता: ।

इस प्रकार की १०८ गालियाँ उन्हें दी हैं जो आसक्त होकर मिथ्या संसार में सच्चा सुख ढूँढ़ना चाहते हैं ताकि वे सावधान हो जायें ।

अपनी निष्ठा उस परमेश्वर में रखो और परमेश्वर को अपना मानकर तथा अपने को परमेश्वर का मानकर कार्य करो । भजन करो, जो भी निर्णय लो, परमेश्वर के होकर लोगे तो वह अंतर्यामी परमेश्वर जरूर तुम्हारे हृदय में शुभ प्रेरणा करेगा और तुम सफल हो सकोगे ।

भारतीय संस्कृति का आभूषण संयम-सदाचार

(महाराज हरिसिंह)

जम्मू-कश्मीर के अंतिम राजा थे महाराज हरिसिंह। वे सत्शास्त्रों का प्रेम व रुचि पूर्वक अध्ययन करते और संतों के सत्संग में जाते थे। इससे उनका जीवन भारतीय संस्कृति के संस्कारों से ओतप्रोत था।

एक बार वे अपने एक विशेष मेहमान के साथ कश्मीर से जम्मू आ रहे थे। उनकी गाड़ी रामवन के निकट पहुँची तो सामने से कुछ गुज्जर किशोरियाँ गुजरती दिखायी दीं। उनको देख मेहमान ने कहा : ''वाह ! आपके राज्य में क्या लाजवाब चूजे हैं।''

महाराज ने तुरंत गाड़ी रुकवायी और दरवाजा खोलकर मेहमान को नीचे उतरने का संकेत किया। जैसे ही वह नीचे उतरा उन्होंने चालक को गाड़ी चलाने का इशारा किया और वे जम्मू आ गये।

मेहमान जैसे-तैसे जम्मू पहुँचा और जब राजमहल में हरिसिंहजी से मिलने जाने लगा तो दरबान ने उन्हें अंदर जाने से रोक दिया। बोला : ''महाराज की आज्ञा नहीं है।'' २-३ दिन इसी प्रकार बीत गये। किसी प्रकार दूरभाष से बात करके मेहमान को महल में आने की आज्ञा मिली।

मुलाकात होने पर महाराज ने रोषभरे शब्दों में कहा : ''जिन्हें आप चूजे कह रहे थे, वे मेरी बच्चियाँ हैं। भारतीय संस्कृति में प्रजा राजा की संतान कहलाती है, अतः राज्य की प्रत्येक लड़की मेरी बच्ची के समान है। संयम-सदाचार हमारे देश का आभूषण है, इसलिए उन पर बुरी निगाह डालनेवाले को क्षमा नहीं किया जाता है। आप हमारे विशेष मेहमान हैं, इसलिए आपको कम सजा दी है।'' महाराज संतों के चरणों में बैठकर सत्संग सुनते थे, उसीके फलस्वरूप उनकी ऐसी ऊँची समझ और ऐसा जबरदस्त प्राणबल था।

समाज में या इतिहास में जहाँ कहीं संयम, सदाचार, ब्रह्मचर्य आदि के संस्कार देखने को मिलते हैं, उनके मूल में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से महापुरुषों का सत्संग ही होता है।

इस देश के महापुरुष चाहे वे स्वामी विवेकानंदजी हों या महात्मा बुद्ध, साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज हों या पूज्य बापूजी - सभीने आजीवन संयम-सदाचार का प्रचार-प्रसार कर देश के युवाधन की सुरक्षा की है। पिछले ५० सालों से पूज्य बापूजी एवं उनके शिष्य विश्वव्यापी स्तर पर युवाधन सुरक्षा के कार्यों में रत हैं। युवाधन सुरक्षा अभियान के अंतर्गत पूज्य बापूजी की प्रेरणा से २ करोड़ से भी ज्यादा 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश' ग्रंथ लोगों तक पहुँचे हैं। करोड़ों युवक-युवतियों ने बापूजी के बताये मार्ग पर चलकर अपना जीवन ओजस्वी-तेजस्वी बनाया है। पूज्य बापूजी द्वारा ८ वर्ष पूर्व की गयी अनोखी पहल के कारण ही आज विश्व के १६७ देशों में असंख्य लोग वेलेंटाइन डे जैसी कुरीति को छोड़कर 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मना के भारतीय संस्कृति की गरिमा को बढ़ा रहे हैं। **(शेष पृष्ठ १२ पर)**

पक्के हित व प्रेम का बंधन
रक्षाबंधन

- पूज्य बापूजी

(रक्षाबंधन : १० अगस्त)

रक्षासूत्र का मनोवैज्ञानिक लाभ

हिन्दू संस्कृति ने कितनी सूक्ष्म खोज की ! रक्षाबंधन पर बहन भाई को रक्षासूत्र (मौली) बाँधती है। आप कोई शुभ कर्म करते हैं तो ब्राह्मण रक्षासूत्र आपके दायें हाथ में बाँधता है, जिससे आप कोई शुभ काम करने जा रहे हैं तो कहीं अवसाद में न पड़ जायें, कहीं आप अनियंत्रित न हो जायें । रक्षासूत्र से आपका असंतुलन व अवसाद का स्वभाव नियंत्रित होता है, पेट में कृमि भी नहीं बनते । और रक्षासूत्र के साथ शुभ मंत्र और शुभ संकल्प आपको असंतुलित होने से बचाता है। **रक्षाबंधन में कच्चा धागा बाँधते हैं लेकिन यह पक्के प्रेम का और पक्के हित का बंधन है।**

वर्षभर के यज्ञ-याग करते-करते श्रावणी पूर्णिमा के दिन ऋषि यज्ञ की पूर्णाहुति करते हैं, एक-दूसरे के लिए शुभ संकल्प करते हैं । यह रक्षाबंधन महोत्सव बड़ा प्राचीन है।

ऋषियों के हम ऋणी हैं

ऋषियों ने बहुत सूक्ष्मता से विचारा होगा कि मानवीय विकास की सम्भावनाएँ कितनी ऊँची हो सकती हैं और असावधानी रहे तो मानवीय पतन कितना निचले स्तर तक और गहरा हो सकता है । रक्षाबंधन महोत्सव खोजनेवाले उन ऋषियों को, वेद भगवान का अमृत पीनेवाले, वैदिक रस का प्रचार-प्रसार करनेवाले और समाज में वैदिक अमृत की सहज-सुलभ गंगा बहानेवाले ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों को मैं प्रणाम करता हूँ। आप भी उन्हें श्रद्धापूर्वक प्रणाम करो जिन्होंने केवल किसी जाति विशेष को नहीं, समस्त भारतवासियों को तो क्या, समस्त विश्वमानव को आत्म-अमृत के कलश सहज प्राप्त हों, ऐसा वैदिक ज्ञान का प्रचार-प्रसार किया है । हम उन सभी आत्मारामी महापुरुषों को फिर से प्रणाम करते हैं।

शिष्य भी करते हैं शुभ संकल्प

इस पर्व पर बहन भाई के लिए शुभकामना करती है। ऋषि अपने शिष्यों के लिए शुभकामना करते हैं । इसी प्रकार शिष्य भी अपने गुरुवर के लिए शुभकामना करते हैं कि 'गुरुवर ! आपकी आयु दीर्घ हो, आपका स्वास्थ्य सुदृढ़ हो । गुरुदेव ! हमारे जैसे करोड़ों-करोड़ों को तारने का कार्य आपके द्वारा सम्पन्न हो।'

हम गुरुदेव से प्रार्थना करें : 'बहन की रक्षा भले भाई थोड़ी कर ले लेकिन गुरुदेव ! हमारे मन और बुद्धि की रक्षा तो आप हजारों भाइयों से भी अधिक कर पायेंगे । आप हमारी भावनाओं की, श्रद्धा की भी रक्षा कीजिये।'

रक्षाबंधन पर संतों का आशीर्वाद

राखी पूर्णिमा पर ब्राह्मण अपने यजमान को रक्षा का धागा बाँधते हैं लेकिन ब्रह्मज्ञानी गुरु धागे के बिना ही धागा बाँध देते हैं। वे अपनी अमृतवर्षी दृष्टि से, शुभ संकल्पों से ही सुरक्षित कर देते हैं अपने भक्तों को।

रक्षाबंधन में केवल बहनों का ही प्यार नहीं है, ऋषि-मुनियों और गुरुओं का भी प्यार तुम्हारे साथ है। आपके जीवन में सच्चे संतों की कृपा पचती जाय। बहन तो भाई को ललाट पर तिलक करती है कि 'भाई तू सुखी रह ! तू धनवान रहे ! तू यशस्वी रहे...' लेकिन मैं ऐसा नहीं कह सकता हूँ। आप सुखी रहें लेकिन कब तक ? यशस्वी रहें तो किसका यश ? मैं तो यह कह सकता हूँ कि आपको संतों की कृपा अधिक-से-अधिक मिलती रहे । संतों का अनुभव आपका अनुभव बनता रहे।

सर्व मांगल्यकारी वैदिक रक्षासूत्र

भारतीय संस्कृति में 'रक्षाबंधन पर्व' की बड़ी भारी महिमा है । इतिहास साक्षी है कि इसके द्वारा अनगिनत पुण्यात्मा लाभान्वित हुए हैं फिर चाहे वह वीर योद्धा अभिमन्यु हो या स्वयं देवराज इन्द्र हो । इस पर्व ने अपना एक क्रांतिकारी इतिहास रचा है।

वैदिक रक्षासूत्र

रक्षासूत्र मात्र एक धागा नहीं बल्कि शुभ भावनाओं व शुभ संकल्पों का पुलिंदा है । यही सूत्र जब वैदिक रीति से बनाया जाता है और भगवन्नाम व भगवद्भाव सहित शुभ संकल्प करके बाँधा जाता है तो इसका सामर्थ्य असीम हो जाता है।

कैसे बनायें वैदिक राखी ?

वैदिक राखी बनाने के लिए एक छोटा-सा ऊनी, सूती या रेशमी पीले कपड़े का टुकड़ा लें। उसमें (१) दूर्वा (२) अक्षत (साबूत चावल) (३) केसर या हल्दी (४) शुद्ध चंदन (५) सरसों के साबूत दाने - इन पाँच चीजों को मिलाकर कपड़े में बाँधकर सिलाई कर दें। फिर कलावे से जोड़कर राखी का आकार दें। सामर्थ्य हो तो उपरोक्त पाँच वस्तुओं के साथ स्वर्ण भी डाल सकते हैं।

वैदिक राखी का महत्त्व

वैदिक राखी में डाली जानेवाली वस्तुएँ हमारे जीवन को उन्नति की ओर ले जानेवाले संकल्पों को पोषित करती हैं।

(१) दूर्वा : जैसे दूर्वा का एक अंकुर जमीन में लगाने पर वह हजारों की संख्या में फैल जाती है, वैसे ही 'हमारे भाई या हितैषी के जीवन में भी सद्गुण फैलते जायें, बढ़ते जायें...' इस भावना का द्योतक है दूर्वा। दूर्वा गणेशजी की प्रिय है अर्थात् हम जिनको राखी बाँध रहे हैं उनके जीवन में आनेवाले विघ्नों का नाश हो जाय।

(२) अक्षत (साबूत चावल) : हमारी भक्ति और श्रद्धा भगवान के, गुरु के चरणों में अक्षत हो, अखंड और अटूट हो, कभी क्षत-विक्षत न हो - यह अक्षत का संकेत है । अक्षत पूर्णता की भावना के प्रतीक हैं। जो कुछ अर्पित किया जाय, पूरी भावना के साथ किया जाय।

(३) केसर या हल्दी : केसर की प्रकृति तेज होती है अर्थात् हम जिनको यह रक्षासूत्र बाँध रहे हैं उनका जीवन तेजस्वी हो। उनका आध्यात्मिक तेज, भक्ति और ज्ञान का तेज बढ़ता जाय । केसर की जगह पिसी हल्दी का भी प्रयोग कर सकते हैं। हल्दी पवित्रता व शुभ का प्रतीक है । यह नजरदोष व नकारात्मक ऊर्जा को नष्ट करती है तथा उत्तम स्वास्थ्य व सम्पन्नता लाती है।

(४) चंदन : चंदन दूसरों को शीतलता और सुगंध देता है । यह इस भावना का द्योतक है कि जिनको हम राखी बाँध रहे हैं, उनके जीवन में सदैव शीतलता बनी रहे, कभी तनाव न हो । उनके द्वारा दूसरों को पवित्रता, सज्जनता व संयम आदि की सुगंध मिलती रहे। उनकी सेवा-सुवास दूर तक फैले ।

(५) सरसों : सरसों तीक्ष्ण होती है। इसी प्रकार हम अपने दुर्गुणों का विनाश करने में, समाज-द्रोहियों को सबक सिखाने में तीक्ष्ण बनें।

अतः यह वैदिक रक्षासूत्र वैदिक संकल्पों से परिपूर्ण होकर सर्व-मंगलकारी है । यह रक्षासूत्र बाँधते समय यह श्लोक बोला जाता है :

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः ।
तेन त्वां अभिबध्नामि[१] रक्षे मा चल मा चल ॥

इस मंत्रोच्चारण व शुभ संकल्प सहित वैदिक राखी बहन अपने भाई को, माँ अपने बेटे को, दादी अपने पोते को बाँध सकती है। यही नहीं, **शिष्य भी यदि इस वैदिक राखी को अपने सद्गुरु को प्रेमसहित अर्पण करता है तो उसकी सब अमंगलों से रक्षा होती है तथा गुरुभक्ति बढ़ती है।**

दाम्पत्य-जीवन में सुख-शांति के सूत्र

संत कबीरजी सत्संग में आये हुए भक्तों को ब्रह्मज्ञान का सत्संग और रामनाम की महिमा तो सुनाते ही थे, साथ ही भक्तों का गृहस्थ-जीवन सुखी व स्वस्थ कैसे रहे इसके उपाय भी बताया करते थे। वे उन्हें संयम, स्नेह, उदारता, त्याग, निश्चिंतता आदि गुणों को विकसित करने की प्रेरणा देते।

एक दिन एक गृहस्थ युवक कबीरजी का सत्संग पूरा होने के बाद भी मौनपूर्वक उनकी कुटिया के बाहर बैठा रहा। संतप्रवर ने उसे अनुशासनसहित बैठा देख कुटिया के भीतर बुलाया और पूछा : ''बेटा ! क्या पूछना चाहते हो ? लगता है तुम्हारा गृहस्थ-जीवन कलह-क्लेश से भरा है, तुम परेशान दिखाई दे रहे हो।''

युवक बड़ी विनम्रता से बोला : ''हाँ ! रोज घर में पत्नी से अनबन होती रहती है। वह मेरी एक नहीं सुनती। मैं तो अनेक बार उससे संबंध-विच्छेद करने का विचार करता हूँ...''

उस परेशान युवक को कुछ समझाने की अपेक्षा कबीरजी भीतर से सूत लाकर कातने लगे और कुछ मिनटों बाद आवाज लगायी : ''देवी ! अँधेरा हो रहा है, दीपक जलाकर रख जाओ।''

यह सुन युवक चकित हो गया कि 'अरे ! सूर्य प्रकाशमान है, उजाला पर्याप्त है फिर दीपक की क्या जरूरत ?' वह सोच ही रहा था कि उनकी पत्नी जलता दीपक रख गयी। पत्नी की ओर से किसी प्रकार का कोई प्रतिवाद न देखकर वह युवक आश्चर्यचकित रह गया। इतने में वे देवी दो गिलास दूध ले आयीं, एक-एक गिलास दोनों को दिया।

कुछ मिनटों बाद पत्नी ने पुनः आकर पूछा : ''जी, दूध में चीनी कम तो नहीं रह गयी ?''

''नहीं-नहीं, हमारे लिए पर्याप्त है।''

यह सुनकर वह युवक तो आश्चर्य के समुद्र में गोते खाने लगा क्योंकि दूध में चीनी की जगह नमक था लेकिन कबीरजी ने कोई फरियाद नहीं की बल्कि चुपचाप दूध को पेड़ की जड़ में डाल के आये थे।

फिर उस युवक ने इन बातों का रहस्य जानने की अपेक्षा अपना ध्यान पुनः स्वयं की समस्या पर केन्द्रित किया और पूछा : ''संतप्रवर ! सुखी गृहस्थ-जीवन के लिए कुछ बतायें। मैं आपकी शरण आया हूँ।''

कबीरजी : ''बेटा ! क्या अभी भी कुछ कहना शेष है ? सब कुछ तो कह दिया। शांतिपूर्ण दाम्पत्य-जीवन के लिए अति आवश्यक है कि पहले स्वयं दूसरों के अनुकूल बनना सीखो, तब औरों को अपने अनुकूल बनाओ। दोनों बदलो, कुछ तुम पत्नी का सहो और कुछ वह तुम्हारी बात माने। सुखी गृहस्थी की आधारशिला है - प्रेम व समर्पण। साथी के दोषों, गलतियों को क्षमा करते रहना और अपनी भूलों के लिए क्षमा माँगना। सदा मधुर भाषी होना। जहाँ प्रेम होगा, वहाँ सहनशीलता, क्षमा आदि गुण स्वतः प्रकट हो जाते हैं। ये गुण टूटते परिवाररूपी सूखे पेड़ों में भी हरियाली लाने में सक्षम हैं।''

''परंतु मैं तो महाराज ! पत्नी में दोष-ही-दोष देखता हूँ, उस पर संदेह भी करता हूँ।''

''भाई ! तूने प्रेम की नींव ही उखाड़ दी। प्रेम का आधार है अविचल विश्वास। कटु आलोचनाएँ, संशय, परस्पर दोष-दर्शन... ये तो दाम्पत्य-जीवन के लिए विष-समान हैं। दोष किसमें नहीं हैं ! सुखी, शांत जीवन जीना चाहते हो तो परदोष ढूँढ़ने और अपने बखान करने की आदत त्यागो। प्रेम का चश्मा पहनोगे तो तुम्हें सर्वत्र अपना प्रभु-ही-प्रभु दिखेगा।

(शेष पृष्ठ १७ पर)

विकास और सफलता के लिए आवश्यक : मातृभाषा व हिन्दी की प्रमुखता

(गतांक का शेष)

मिथ्या धारणा (२) : सार्वभौमिक विश्व के लिए अंग्रेजी जरूरी। लोग तर्क देते हैं कि अगर सार्वभौमिक विश्व में भाग लेना है और उससे लाभ उठाना है तो भारत के लिए अंग्रेजी मुख्य भाषा के रूप में जरूरी है।

सत्य : जब अंतर्राष्ट्रीय मामलों की बात हो तो यह कहना कुछ हद तक सही है, मगर वह राष्ट्र की गतिविधियों का सिर्फ एक छोटा-सा भाग है। यह उन अप्रवासी भारतीयों के लिए भी सही है जो इस भूमि को छोड़ गये हैं लेकिन सवा अरब की जनसंख्या के राष्ट्र में वे कुछ लाख ही हैं।

यह कहना कि सार्वभौमिक विश्व में अंग्रेजी भाषा ही एकमात्र रास्ता है, ज्यादा अर्थ नहीं रखता। विश्व के मुख्य निर्यातक राष्ट्रों पर एक नजर डालें तो पता चलता है कि इन १० मुख्य देशों में से ८ देश कामकाज अंग्रेजी में नहीं करते हैं। वे कामकाज अपनी संबंधित भाषाओं में ही करते हैं तथा पूर्ण रूप से सफल हैं और उनका विश्वमंच पर आदर किया जाता है।

मिथ्या धारणा (३) : सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) जगत में भारत की सफलता का कारण मुख्य रूप से अंग्रेजी भाषा को माना जाने लगा।

सत्य : यह निष्कर्ष निकालना कि अंग्रेजी भारत की आईटी सफलता के लिए समाज में प्रमुख भाषा होनी चाहिए, बहुत भ्रामक है। विश्व की प्रमुख आईटी कम्पनियों में से एक सेमसंग इलेक्ट्रॉनिक्स को देखते हैं। यह कम्पनी दक्षिण कोरिया की है, जिसमें कोरियन भाषा का प्रभुत्व है। १९६९ में स्थापित सेमसंग ने वर्ष २०१२ में १८९ बिलियन डॉलर की विश्वव्यापी बिक्री दर्ज की। ये आँकड़े उस सिद्धांत को बेबुनियाद ठहरा देते हैं कि आईटी में वैश्विक सफलता के लिए अंग्रेजी ही प्रमुख भाषा होनी चाहिए।

सफलता के लिए जरूरी है स्पष्ट इरादा, जो लगातार क्रियान्वयन की सहायता से शक्तिशाली योजनाओं में बदला जाता है और यही भारतीय आईटी जगत की सफलता का कारण है, न कि अंग्रेजी भाषा। और यही सब कार्य यदि लोगों की सहज भाषा में किया जाय तो यह एक अड़चन नहीं बल्कि अति लाभकारी सिद्ध होगा।

स्वदेशी भाषा के मामले में भारत को जापानी, जर्मन या कोरियन प्रतिमान का अनुकरण करना चाहिए। इन देशों में जनता अपनी भाषा में सब कुछ सीख सकती है और इनमें विदेशी भाषा सीखना कभी भी जरूरी नहीं रहा। इसका परिणाम यह रहा कि उनके देश की पूरी जनसंख्या की सामूहिक शक्ति आर्थिक प्रगति के काम में लायी गयी है। विदेशी भाषा का उपयोग करनेवालों की तुलना में स्वदेशी भाषा का उपयोग करनेवाले इन देशों का आत्मविश्वास भी ऊँचा है। अगर हमारे लोगों को अंग्रेजी नहीं आती तो उन्हें छोटा महसूस कराते रहने में कोई कसर नहीं छोड़ी जाती है। यह मूर्खता है, गुलाम मानसिकता है।

***

(पृष्ठ १६ से 'दाम्पत्य जीवन...' का शेष) जाओ, अपनी उत्कृष्टता के अहंकार को त्याग के परदोष-दर्शन त्याग दो और सहनशील बनो। इसीमें तुम्हारा और तुम्हारे दाम्पत्य-जीवन का मंगल है।''

कबीरजी के ये आशीर्वचन सुनकर उस युवक में आशा-विश्वास की एक लहर दौड़ गयी। संतश्री के वचनों का पालन कर, उनके सत्संग-प्रवचन का स्वयं तथा अपनी पत्नी को भी लाभ दिला के उसने सुखमय व भक्ति-ज्ञान संयुक्त दाम्पत्य-जीवन व्यतीत किया। सत्संग सुन के उस दम्पति की बुद्धि विलक्षण लक्षणों से सम्पन्न हुई। सुख-दुःख में वे सम रहने लगे और परमात्मा को पाने के परम पुरुषार्थ ने उन्हें संयमी-सदाचारी भी बना दिया।

मासानुसार गर्भिणी परिचर्या

(गतांक से आगे)

पाँचवाँ महीना : इस महीने से गर्भ में मस्तिष्क का विकास विशेष रूप से होता है, अतः गर्भिणी पाचनशक्ति के अनुसार दूध में १५ से २० ग्राम घी ले या दिन में दाल-रोटी, चावल में १-२ चम्मच घी, जितना हजम हो जाय उतना ले। रात को १ से ५ बादाम (अपनी पाचनशक्ति के अनुसार) भिगो दे, सुबह छिलका निकाल के घोंटकर खाये व ऊपर से दूध पिये।

इस महीने के प्रारम्भ से ही माँ को बालक में इच्छित धर्मबल, नीतिबल, मनोबल व सुसंस्कारों का अनन्य श्रद्धापूर्वक सतत मनन-चिंतन करना चाहिए। ब्रह्मनिष्ठ महापुरुषों का सत्संग एवं उत्तम शास्त्रों का श्रवण, अध्ययन, मनन-चिंतन करना चाहिए। 'हे प्रभु ! आनंददाता !!...' प्रार्थना आत्मसात् करे तो उत्तम है।

छठा व सातवाँ महीना : इन महीनों में दूसरे महीने की मधुर औषधियों (पिछले अंक का पृष्ठ २० देखें) में गोखरू चूर्ण का समावेश करे व दूध-घी से ले। आश्रम-निर्मित तुलसी-मूल की माला कमर में धारण करे।

इस महीने से प्रातः सूर्योदय के पश्चात् सूर्यदेव को जल चढ़ाकर उनकी किरणें पेट पर पड़ें, ऐसे स्वस्थता से बैठ के उँगलियों में नारियल तेल लगाकर पेट की हलके हाथों से मालिश (बाहर से नाभि की ओर) करते हुए गर्भस्थ शिशु को सम्बोधित करते हुए कहे : 'जैसे सूर्यनारायण ऊर्जा, उष्णता, वर्षा देकर जगत का कल्याण करते हैं, वैसे तू भी ओजस्वी, तेजस्वी व परोपकारी बनना।'

माँ के स्पर्श से बच्चा आनंदित होता है। बाद में २ मिनट तक निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए मालिश चालू रखे।

ॐ भूर्भुवः स्वः ।
तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि। धियो यो
नः प्रचोदयात्॥
(यजुर्वेद : ३६.३)

रामो राजमणिः सदा
विजयते रामं रमेशं भजे
रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः।
रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहं
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर॥
(श्री रामरक्षास्तोत्रम् : ३७)

रामरक्षास्तोत्र के उपर्युक्त श्लोक में 'र' का पुनरावर्तन होने से बच्चा तोतला नहीं होता। पिता भी अपने प्रेमभरे स्पर्श के साथ गर्भस्थ शिशु को प्रशिक्षित करे।

सातवें महीने में स्तन, छाती व पेट पर त्वचा के खिंचने से खुजली शुरू होने पर उँगली से न खुजलाकर देशी गाय के घी की मालिश करनी चाहिए।

आठवाँ व नौवाँ महीना : इन महीनों में चावल को ६ गुना दूध व ६ गुना पानी में पकाकर घी डाल के पाचनशक्ति के अनुसार सुबह-शाम खाये अथवा शाम के भोजन में दूध-दलिये में घी डालकर खाये। शाम का भोजन तरल रूप में लेना जरूरी है।

गर्भ का आकार बढ़ने पर पेट का आकार व भार बढ़ जाने से कब्ज व गैस की शिकायत हो सकती है। निवारणार्थ निम्न प्रयोग अपनी प्रकृति के अनुसार करे :

आठवें महीने के १५ दिन बीत जाने पर २ चम्मच एरंड तेल दूध से सुबह १ बार ले, फिर नौवें महीने की शुरुआत में पुनः एक बार ऐसा करे अथवा त्रिफला चूर्ण या इसबगोल में से जो भी चूर्ण प्रकृति के अनुकूल हो उसका सेवन वैद्यकीय सलाह के अनुसार करे।

पुराने मल की शुद्धि के लिए अनुभवी वैद्य द्वारा निरूह बस्ति व अनुवासन बस्ति ले।

चंदनबला लाक्षादि तेल से अथवा तिल के तेल से पीठ, कटि से जंघाओं तक मालिश करे और इसी तेल में कपड़े का फाहा भिगोकर रोजाना रात को सोते समय योनि के अंदर गहराई में रख लिया करे। इससे योनिमार्ग मृदु बनता है और प्रसूति सुलभ हो जाती है।

पंचामृत : ९ महीने नियमित रूप से प्रकृति व पाचनशक्ति के अनुसार पंचामृत ले।

पंचामृत बनाने की विधि : १ चम्मच ताजा दही, ७ चम्मच दूध, २ चम्मच शहद, १ चम्मच घी व १ चम्मच मिश्री को मिला लें। इसमें १ चुटकी केसर भी मिलाना हितावह है।

गुण : यह शारीरिक शक्ति, स्फूर्ति, स्मरणशक्ति व कांति को बढ़ाता है तथा हृदय, मस्तिष्क आदि अवयवों को पोषण देता है। यह तीनों दोषों को संतुलित करता है व गर्भिणी अवस्था में होनेवाली उलटी को कम करता है।

उपवास में सिंघाड़े व राजगिरे की खीर का सेवन करे। इस प्रकार प्रत्येक गर्भवती स्त्री को नियमित रूप से उचित आहार-विहार का सेवन करते हुए नवमास चिकित्सा विधिवत् लेनी चाहिए ताकि प्रसव के बाद भी उसका शरीर सशक्त, सुडौल व स्वस्थ बना रहे, साथ ही वह स्वस्थ, सुडौल, सुंदर और हृष्ट-पुष्ट शिशु को जन्म दे सके। इस चिकित्सा के साथ महापुरुषों के सत्संग-कीर्तन व शास्त्र के श्रवण-पठन का लाभ अवश्य लें।

पुण्यदायी तिथियाँ

२२ जुलाई : कामिका एकादशी (व्रत व रात्रि-जागरण से भयंकर यमदूत व दुर्गति से बचानेवाला तथा पूरी पृथ्वी के दान का फल देनेवाला व्रत)

२४ जुलाई : चतुर्दशी-आर्द्रा नक्षत्र योग (रात्रि ११-५५ से २५ जुलाई दोपहर १२-२७ तक, ॐकार का जप अक्षय फलदायी)

२७ जुलाई : रविपुष्यामृत योग (सूर्योदय से शाम ६-०५ तक) (रविवार के साथ पुष्य नक्षत्र का संयोग 'रविपुष्यामृत योग' कहलाता है। यह योग मंत्रसिद्धि और औषधि-प्रयोग के लिए विशेष फलप्रद है।)

१ अगस्त : नाग पंचमी (प्राणिमात्र में ईश्वरदृष्टि दृढ़ करनेवाले इस पर्व में नाग पूजन एवं नाग स्तुति द्वारा नागों के प्रति नफरत व भय को आत्मिक प्रेम व निर्भयता में परिणत करने का विधान ऋषियों ने किया है।)

३ अगस्त : रविवारी सप्तमी (सूर्योदय से शाम ६-११ तक)

७ अगस्त : पुत्रदा-पवित्रा एकादशी (मनोवांछित फल प्रदान करनेवाला व्रत)

१० अगस्त : श्रावणी पूर्णिमा, नारियली पूर्णिमा, रक्षाबंधन, संस्कृत दिवस

१७ अगस्त : जन्माष्टमी, श्रीकृष्ण जयंती उपवास (निशीथकाल : रात्रि १२-२० से १-०६ तक), विष्णुपदी संक्रांति (पुण्यकाल : सूर्योदय से दोपहर १२-४३ तक)

घर में सुख-सम्पत्ति लाने के लिए

गाय के दूध के दही में थोड़ा जौ और तिल मिला दें। फिर उससे रगड़-रगड़कर 'ॐ लक्ष्मीनारायणाय नमः, ॐ लक्ष्मीनारायणाय नमः।' जप करके स्नान करें। – पूज्य बापूजी

संसाररूपी हाथी को विदीर्ण करनेवाले सिंह एवं भवरोग निवारक धन्वंतरि

संत एकनाथजी महाराज जीव का भवरोग निवारनेवाले सद्गुरु की अनुपम महिमा का वर्णन करते हुए कहते हैं : ''सद्गुरुरूपी धन्वंतरि को मैं प्रणाम करता हूँ । इस संसार में भवरोग की बाधा दूर करने में उनके सिवाय अन्य कोई समर्थ नहीं है । भवरोग के संताप से लोग आधिभौतिक, आधिदैविक एवं आध्यात्मिक इन त्रिविध तापों से झुलस रहे हैं । 'मैं' और 'मेरा' जैसे संकल्पों से वे सदा बड़बड़ाते रहते हैं । चित्त में द्वैतभावना आने से उनका मुँह कड़वा हो जाता है इसीलिए वे मुँह से विष की तरह कड़वी बातें करते रहते हैं । व्याधि से पीड़ित होने के कारण वे विवेक को लात मार देते हैं और धैर्य को झटककर वासनारूपी जंगल में भटकने लगते हैं तथा महत्त्वाकांक्षाओं के दलदल में धँसते जाते हैं । भवरोग के भ्रम में वे कैसा पागलों जैसा आचरण करते हैं ! जो नहीं खाना चाहिए उसे खाने लगते हैं, जो नहीं करना चाहिए वह करते दिखाई देते हैं और स्त्रियों के पीछे पागलों की तरह दौड़ते रहते हैं । उनकी ज्ञानशक्ति क्षीण हो जाती है । इस प्रकार सदा कुपथ्य करते रहने के कारण उनमें विकाररूपी जीर्ण ज्वर व क्षयरोग उत्पन्न होने लगता है ।

(संत एकनाथजी महाराज)

इन विकारों के कारण जीव में चिंता उत्पन्न हो जाती है और सुख नष्ट हो जाता है । इस रोग का ज्वर इतना विचित्र रहता है कि जो मधुर परमार्थ है वह तो कड़वा लगने लगता है और विषैले विषय मधुर लगते हैं ! इस रोग को निर्मूल करने के लिए सत्कथारूपी काढ़ा दिया जाय तो उसको रुचता ही नहीं । इस प्रकार वह पूरी तरह रोगग्रस्त होकर रहता है ।

ऐसा यह जबरदस्त रोग देखकर सद्गुरुरूपी चतुर वैद्य आगे बढ़ते हैं और कृपादृष्टि से उसकी ओर देखकर उसका रोग तत्काल ठीक कर देते हैं ।

रोगी का महान भाग्य उदित तब होता है, जब वह गुरुकृपा का कूर्मावलोकन (कछुए की तरह दूर से ही गुरुकृपा को प्राप्त करते रहना) करने लगता है और यह रोगी के लिए अमृतपान की तरह सिद्ध होकर उसे तत्काल सावधान कर देता है । सावधान होने पर वह रोगी नित्य-अनित्य विवेकरूपी पाचन अत्यंत सावधानी से करने लगता है । किंतु इतने से उसका जीर्ण ज्वर व क्षयरोग पूर्ण रूप से दूर नहीं होता । इसीलिए सद्गुरु वैद्य उसका रसोपचार शुरू करते हैं । रोगी का (ॐकार की)अर्धमात्रारूपी अक्षर-रस देते ही उसका क्षयरोग दूर होकर वह पहले जैसा अक्षय (अविनाशी) हो जाता है ।

रोगी कहीं फिर से भीषण कुपथ्य न कर दे इसलिए सद्गुरुरूपी वैद्य उस पर वैराग्य की चौकीदारी रखते हैं और निरंतर आत्मानुसंधान का पथ्य देकर संसाररूपी रोग का निवारण करते हैं । रोगी के पूरी तरह ठीक हो जाने पर उसे तेज भूख लगती है । इसलिए वह मानसिक चिंता की लाई बनाकर भुक्खड़ की तरह एक ही क्षण में खा जाता है । गुड़ और चीनी की चाशनी की तरह कर्म-अकर्म के लड्डू, मीठे या कड़वे कहे बिना, अपनी इच्छा से खाने लग जाता है ।

'ब्रह्मास्मि' की चरम प्रवृत्ति के सुंदर पकवान जैसे ही दिखाई पड़ते हैं, उन्हें तत्काल खाकर वह माया के पीछे पड़ जाता है । तब माया उसके डर से भागकर अपने मिथ्यात्व में विलीन हो जाती है । सद्गुरुकृपा से उसका 'स्व' आनंद पुष्ट होता है और संसार-रोग बिल्कुल नष्ट होकर मोक्ष की प्राप्ति होती है । किंतु जो सद्गुरु की

महिमा को भूलकर मोक्ष को गुरु-भजन से श्रेष्ठ मानते हैं, वे मूर्ख हैं क्योंकि मोक्ष तो गुरुचरणों का सेवक है ।

हमें तो सद्गुरु-दृष्टि से ही परम स्वास्थ्य-लाभ होता है । हम सद्गुरु-स्तुति से ही संसार में पूजनीय होते हैं । गुरुसेवा के कारण ही हम भाग्यवान हैं और हमारा सामर्थ्य हमें गुरु-स्तुति से ही प्राप्त हुआ है । सद्गुरु का नाम ही हमारे लिए वेदशास्त्र है, सारे मंत्रों की अपेक्षा सद्गुरु का नाम ही हमें अधिक श्रेष्ठ मालूम होता है । एकमात्र सद्गुरु-तीर्थ सारे तीर्थों को पवित्र करता है ।

हे गुरुदेव ! आपके उदार गुणों का वर्णन करते-करते मन को तृप्ति नहीं हो पाती । हे संसाररूपी हाथी को विदीर्ण करनेवाले सिंह सद्गुरु ! आपकी जय हो !''

(श्री एकनाथी भागवत, अध्याय : १०)

साकार और निराकार की बात

- पूज्य बापूजी

संत लालजी महाराज के प्रेम, भक्ति का भी कुछ प्रसाद लोगों को मिले इस हेतु मैंने एक बार नारेश्वर के अपने शिविर का उद्‌घाटन उनके हाथों करवाया। इस प्रसंग पर उन्होंने कहा : ''लोग निराकार की बातें करते हैं, ब्रह्मज्ञान की बातें करते हैं, 'मैं ब्रह्म हूँ, तुम ब्रह्म हो' - ऐसा ब्रह्मज्ञान का उपदेश सबको देने लगते हैं। स्वयं पूरा दिन साकार में रहते हैं, शरीर साकार है, खाते हैं साकार में और बातें निराकार की करते हैं। तो क्या साकार के बिना उनका काम चल सकता है ?''

मैं समझ गया कि उनकी कैंची मेरी ओर है। उनके हृदय में मेरे लिए तो बहुत प्रेम था परंतु उनकी दृष्टि में तो ज्ञान-ज्ञान क्या ? हकीकत में उन्होंने जिस भक्तिमार्ग से यात्रा की थी, उसी मार्ग के लिए उन्हें इतनी आत्मीयता हो गयी थी कि दूसरे ज्ञानादि मार्ग उन्हें अधिक पसंद नहीं थे।

लालजी महाराज ने अव्यक्त की बात काट डाली। इसलिए दूसरे दिन जब वे शिविर में आकर बैठे तब मैंने कहा : ''कल उद्‌घाटन में मेरे मित्रसंत ने कहा कि ''पूरा दिन साकार में रहते हैं और बातें निराकार की करते हैं; परंतु साकार के बिना छुटकारा नहीं है।'' तो मैं अर्ज करूँगा कि साकार के बिना छुटकारा नहीं है या निराकार के बिना छुटकारा नहीं है ? - इस बात को जरा हमें समझना पड़ेगा। पूरा दिन तो हम सब साकार में जीते हैं लेकिन झख मारकर रात को साकार शरीर निराकार से मिलता है कि नहीं ? और साकार को सँभालने की शक्ति भी निराकार में डूबते हैं तभी आती है कि नहीं ? गन्ने का रस मीठा और पानी फीका। तो भी गन्ने का रस पीने से प्यास नहीं बुझती। यद्यपि गन्ने के रस में भी तो पानी ही आधारस्वरूप है। वैसे ही साकार मीठा लगता है, निराकार प्रारम्भ में फीका लगता है परंतु साकार को सत्ता भी निराकार से ही मिलती है। अखा भगत की बात सुनने जैसी है :

सजीवाए निर्जीवाने घड्यो अने पछी कहे मने कंई दे।
अखो तमने ई पूछे के तमारी एक फूटी के बे ?

'सजीव ने निर्जीव (मूर्ति, प्रतिमा) को बनाया, फिर वही उससे माँगने लगता है कि मुझे कुछ दो। तो अखा भगत तुमसे यह पूछते हैं कि तुम्हारी एक आँख फूट गयी है या दोनों ?'

जो साकार है उसके गर्भ में निराकार ही है। तुम्हारे मूल में देखो अथवा परमात्मा के मूल में देखो कि वह निराकार है या नहीं ? अव्यक्त ही व्यक्त होकर भासित होता है। व्यक्त असत्य है, अव्यक्त ही सत्य है।''

मेरी बातें सुनकर वे मेरे सामने देखने लगे और फिर हम दोनों हँस पड़े। वास्तव में हम दोनों की ऐसी जोड़ी थी कि ऐसी जोड़ी तुमने कहीं और नहीं देखी होगी। हम दोनों के बीच अनोखा प्रेम था।

मेरी क्रांतिकारी योजना

(मद्रास के विक्टोरिया हॉल में दिया गया भाषण) **- स्वामी विवेकानंदजी**

(अंक २५४ से आगे)

अब मैं मद्रास की समाज-सुधारक समितियों के बारे में कुछ कहूँगा। उन्होंने मेरे लिए अनेक मधुर शब्दों का प्रयोग किया और मुझे बताया कि मद्रास और बंगाल के समाज-सुधारकों में बड़ा अंतर है। मैं उनकी इस बात से सहमत हूँ। बंगाल में कहीं-कहीं, कुछ-कुछ पुनरुत्थान हुआ है पर मद्रास में यह पुनरुत्थान नहीं है - यह है समाज की स्वाभाविक उन्नति। इन संस्थाओं में से कुछ मुझे डराकर अपना सदस्य बनाना चाहती हैं। ये लोग ऐसा करें यह एक आश्चर्यजनक बात है। जो मनुष्य अपने जीवन के १४ वर्षों तक लगातार फाकाकशी (भोजन की अनियमितता, भुखमरी) का मुकाबला करता रहा हो, जिसे यह भी न मालूम रहा हो कि दूसरे दिन का भोजन कहाँ से आयेगा, सोने के लिए स्थान कहाँ मिलेगा, उसे इतनी सरलता से धमकाया नहीं जा सकता।...

संसार का इतिहास हमें यह बताता है कि जहाँ कहीं उत्तेजना से समाज का सुधार करने का प्रयत्न हुआ है, वहाँ केवल यही फल हुआ कि जिस उद्देश्य से वह किया गया था, उस उद्देश्य को ही उसने विफल कर दिया।

दासत्व को नष्ट कर देने के लिए अमेरिका में जो लड़ाई ठनी थी, अधिकार और स्वतंत्रता की स्थापना के लिए इससे बड़े सामाजिक आंदोलन की कल्पना ही नहीं की जा सकती। तुम सभी लोग इसे जानते हो। पर उसका फल क्या हुआ ? यही कि आजकल के दास इस युद्ध के पूर्व के दासों की अपेक्षा सौ गुनी अधिक बुरी दशा में पहुँच गये। (१८९० के दशक में अमेरिका की स्थिति के संदर्भ में कहा गया वाक्य।)...

समाज के दोषों को प्रबल उत्तेजनापूर्ण आंदोलन द्वारा अथवा कानून के बल पर सहसा हटा देने का यही परिणाम होता है। इतिहास इस बात का साक्षी है। यह मेरा प्रत्यक्ष अनुभव है।... (सालभर पहले यौन-शोषण से संबंधित बना नया कानून इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। मा. श्री न्यायाधीश विरेन्द्र भट्ट ने इस कानून
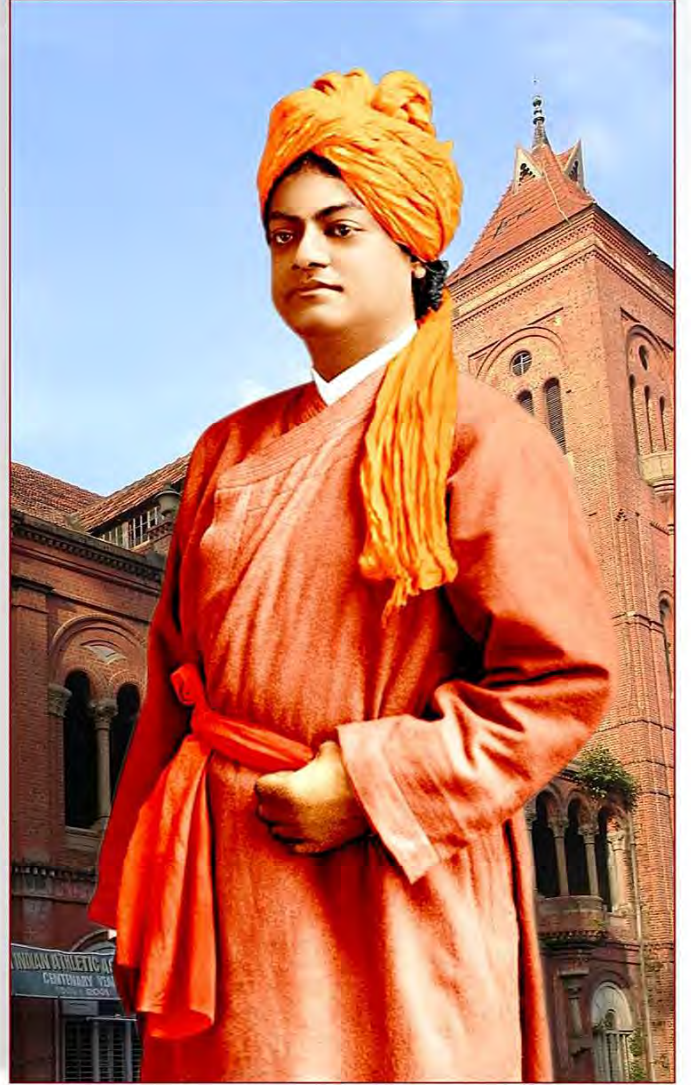
में संशोधन करने की माँग करते हुए कहा कि 'देश में यौन-उत्पीड़न के झूठे मामलों की बाढ़-सी आ गयी है।' गौरतलब है कि पूज्य बापूजी को भी इसी प्रकार के झूठे मामलों में फँसाया गया है। प्रसिद्ध न्यायविद् डॉ. सुब्रमण्यम स्वामी का भी कहना है कि 'संत आशारामजी बापू पर किया गया केस पूरी तरह बोगस है।' - श्री आर.एन. ठाकुर)

जो भी अशिक्षित विदेशी पृथ्वी की प्रदक्षिणा करता हुआ भारत में पहुँचता है, वह रेलगाड़ी में बैठ के भारत को उड़ती नजर से देख भर लेता है और बस, फिर भारत की भयानक बुराइयों पर (शेष पृष्ठ २९ पर)

वह इतिहास पढ़ो तो खून के आँसू बहेंगे

- पूज्य बापूजी

हर युग में, हर समय में भगवान के भक्तों पर, संतों पर नीच मति और नीच मुरादोंवाले कुछ-का-कुछ लांछन लगाते रहते हैं लेकिन सज्जन अपनी भक्ति, श्रद्धा और प्रभुप्रीति से संतों को नवाज के अपना बेड़ा पार करने में सफल भी तो हो जाते हैं।

आज स्वामी विवेकानंदजी को सब जानते हैं लेकिन जिन्होंने उनको सताया और उन पर लांछन लगाये, वे कौन-से नरक में होंगे यह विवेकानंद को भी पता नहीं और मुझे भी पता नहीं। स्वामी विवेकानंद को तो लाभ-ही-लाभ हुआ। उनके खिलाफ कितना लिखा गया फिर भी अंत में तो लाभ का पक्ष विवेकानंद के पास रहा। इसलिए भगवान के रास्ते जानेवाले को कभी डरना नहीं चाहिए, कभी घबराना नहीं चाहिए।

समय आव्ये थतुं जाशे प्रभु करतार छे न्यारो...

नरेन्द्र को विवेकानंद बनने में कितने-कितने लोगों ने क्या-क्या विघ्न डाले होंगे ! फिर भी नरेन्द्र की दृढ़ श्रद्धा और रामकृष्णदेव की महान कृपा ने विश्व को एक धर्म-धुरंधर महापुरुष दे दिया 'स्वामी विवेकानंद' के नाम से। लेकिन उस समय रामकृष्णदेव की समाधि बनाने के लिए जगह भी नहीं मिल रही थी विवेकानंद जैसे महापुरुष को। क्योंकि तथाकथित धार्मिक लोग उन्हें चंदा भी नहीं दे पाये, इतने अभागे बन गये थे ! धर्मांतरणवालों के कुप्रचार के शिकार बन गये थे। विवेकानंदजी को अपने गुरुदेव की समाधि बनाने के लिए कितना श्रम उठाकर कैसे-कैसे चंदा करना पड़ा और कहाँ-कहाँ जाकर समाधि बनानी पड़ी, वह इतिहास पढ़ो तो आँखों से खून के आँसू बहेंगे।

कुप्रचारवालों ने विवेकानंदजी के लिए इतना कुप्रचार किया, रामकृष्णदेव के लिए किया ! और भी जो संत प्रसिद्ध होते हैं उनके लिए धर्मांतरणवाले कुछ-न-कुछ हथकंडों को अपनाकर अपना यह कार्य चालू कर देते हैं और अपने ही कुछ लोग बिकाऊ हो जाते हैं।

कुल्हाड़ी को जिस वृक्ष से लकड़ी मिली वह उसी वृक्ष को काट रही है। लकड़ी के बल से ही कुल्हाड़ी वृक्षों को काट रही है। ऐसे ही जो बिकाऊ लोग हैं, वे देश को काटने में लगे हैं। देशद्रोही यह नहीं सोचते कि हमारी संस्कृति कटती जायेगी तो हमें भी वे लोग अपनी चपेट में ले लेंगे।

तो भारत को कमजोर बनानेवाली ताकतों से जुड़े हुए लोगो ! हम हाथ जोड़ के प्रार्थना करते हैं कि देश को तोड़ने की साजिशवालों के साथ मिलकर पैसे के लालच पर बिकाऊ न बनें। हमारा भारत देश अखंड रहे और दुनिया के रोग-शोक तथा अशांति, अनिद्रा के रोगों को मिटाकर दुनिया को सुख-शांति और प्रभु का प्रसाद दे और भारत विश्वगुरु के ऊँचे शिखर पर चमके, ऐसे काम में आप लग जाओ। अगर नहीं लगते हो तो आपका दुर्भाग्य है। उस काम में नहीं लगो तो दुर्भाग्य है लेकिन महादुर्भाग्य का काम मत करो भारत को तोड़ने का। भारत के संतों और भक्तों को तोड़कर आप पैसे कहाँ सँभालोगे ? ये विदेशी लोग आपको भी कैसे भून डालेंगे आप कल्पना नहीं कर सकते !

देश की आजादी की पढ़ाई भी मैं पढ़ूँगा बालक केशवराव

- पूज्य बापूजी
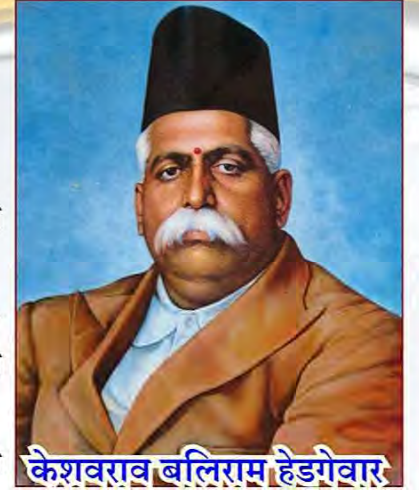
केशवराव बलिराम हेडगेवार

विद्यालय में बच्चों में मिठाई बाँटी जा रही थी । जब ९ वर्ष के एक बालक को मिठाई का टुकड़ा दिया गया तो उसने पूछा : ''मिठाई किस बात की है ?''

कैसा बुद्धिमान रहा होगा वह बालक ! जीभ का लम्पट नहीं वरन् विवेक-विचार का धनी रहा होगा । बालक को बताया गया : ''आज महारानी विक्टोरिया के राज्य के ६० वर्ष हो गये, इसलिए खुशी मनायी जा रही है ।''

बालक ने तुरंत मिठाई के टुकड़े को कूड़ेदान में फेंक दिया और कहा : ''रानी विक्टोरिया अंग्रेजों की रानी है और उन अंग्रेजों ने हमको गुलाम बनाया है । गुलाम बनानेवालों की खुशियाँ हम क्यों मनायें ? हम तो खुशियाँ तब मनायेंगे जब हम अपने देश भारत को आजाद करा लेंगे ।''

एक बार किसीने केशव से कहा : ''देश-सेवा की और लोगों को जगाने की बात इस उम्र में नहीं करो, अभी तो पढ़ाई करो ।''

केशव : ''बूढ़े-बुजुर्ग और अधिकारी लोग मुझे सिखाते हैं कि देश-सेवा बाद में करना । जो काम आपको करना चाहिए, वह आप नहीं कर रहे हैं इसलिए हम बच्चों को करना पड़ेगा । आप मुझे अक्ल देते हैं ! अंग्रेज हमें दबोच रहे हैं, हमें गुलाम बनाये जा रहे हैं और आप चुप्पी साधे जुल्म सह रहे हैं ! आप जुल्म के सामने लोहा लेने का संकल्प करें तो मैं पढ़ाई में लग जाऊँगा, नहीं तो पढ़ाई के साथ देश की आजादी की पढ़ाई भी मैं पढ़ूँगा और दूसरे विद्यार्थियों को भी मजबूत बनाऊँगा ।''

आखिर बड़े-बूढ़े-बुजुर्गों को कहना पड़ा : ''यह भले १४ वर्ष का बालक लगता है लेकिन कोई होनहार है ।'' उन्होंने केशव की पीठ थपथपाते हुए कहा : ''शाबाश है, शाबाश !''

''आप मुझे शाबाशी तो देते हैं लेकिन आप भी जरा हिम्मत से काम लें । जुल्म करना तो पाप है लेकिन जुल्म सहना दुगना पाप है ।''

केशव ने बूढ़े-बुजुर्गों को सरलता से, नम्रता से, धीरज से समझाया ।

केशव पढ़ते-पढ़ते आगे चलकर मेडिकल कॉलेज में भर्ती हुआ । वहाँ अमूल्यरत्न घोष नामक एक बड़ा लम्बा-तगड़ा विद्यार्थी था । वह रोज पुलअप्स करता और दंड-बैठक भी लगाता था । अपनी भुजाओं पर उसे बड़ा गर्व था कि 'अगर एक घूँसा किसीको लगा दूँ तो दूसरा न माँगे ।' एक दिन महाविद्यालय में जब उसने केशव की प्रशंसा सुनी तब वह केशव के सामने गया और बोला : ''क्यों रे ! तू बड़ा बुद्धिमान, शौर्यवान और धैर्यवान होकर उभर रहा है । है शूरता तो मुझे मुक्के मार, मैं भी तेरी ताकत देखूँ ।''

केशव : ''नहीं-नहीं, भैया ! मैं आपको नहीं मारूँगा । आप ही मुझे मुक्के मारिये ।'' ऐसा कहकर केशव ने अपनी भुजा आगे कर दी । अमूल्यरत्न ने मुक्के मारे - एक, दो, तीन... पाँच... पन्द्रह... पचीस... तीस... चालीस... मुक्के मारते-मारते आखिर वह थक गया, पसीने से तर-बतर हो गया । देखनेवाले लोग चकित हो गये । आखिर अमूल्यरत्न ने कहा : ''तेरा शरीर हाड़-मांस का है कि लोहे का ? सच बता, तू कौन है ? मुक्के मारते-मारते मैं थक गया पर तू 'उफ' तक नहीं करता ?''

प्राणायाम का रहस्य जाना होगा केशवराव ने ! आत्मबल बचपन से ही विकसित था । दुश्मनी के भाव से भरा अमूल्यरत्न घोष केशव का मित्र बन गया और गले लगा ।

यह साहसी, वीर, निडर, धैर्यवान और बुद्धिमान बालक केशव और कोई नहीं, बाल्यकाल के केशवराव बलिराम हेडगेवार ही थे, जिन्होंने आगे चलकर 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' की स्थापना की ।

आत्मा-परमात्मा को जोड़ने का सिमकार्ड गुरुमंत्र

संत कबीरजी ने कहा :

सद्गुरु मेरा शूरमा, करे शब्द की चोट।
मारे गोला प्रेम का, हरे भरम की कोट॥

जब सद्गुरु के द्वारा मंत्रदीक्षा मिलती है तो आधी साधना तो उसी दिन सम्पन्न हो जाती है। जैसे तुम्हारे घर बिजली का साधारण तार आये या मोटा तार भी हो लेकिन उतना फायदा नहीं होगा परंतु जब वही तार बिजली-घर (पावर हाउस) के खम्भे से जुड़कर आता है तो वह चाहे पतला तार हो फिर भी तुम्हारे घर का अँधेरा मिटा देगा। तुम पानी गर्म करना चाहते हो तो हीटर जोड़ दो और ठंडा करना चाहते हो तो उन छेड़ों को फ्रिज से जोड़ दो। छेड़े तो साधारण दिख रहे हैं लेकिन उनमें पावर हाउस का प्रवाह है। ऐसे ही गुरुमंत्र दिख रहा है साधारण शब्द लेकिन सद्गुरु के आत्मा-परमात्मा का उसके साथ प्रवाह जुड़ा है फिर चाहे तुम योगी बनो, चाहे ध्यानी बनो, चाहे प्रसिद्ध बनो, वह प्रवाह काम देता है। बाहर की विद्युत लाने के लिए तो तुम्हारे घर में बिजली-घर से जुड़े हुए छेड़े चाहिए लेकिन विज्ञान ने भी विकास कर लिया है, अभी तो मोबाइल फोन से बात होती है, बिना छेड़े के भी छेड़े जुड़ जाते हैं। जब यंत्र के युग में छेड़े जोड़े बिना भी छेड़े जुड़ जाते हैं तो हमारा प्राचीन मंत्र-विज्ञान तो उससे बहुत ज्यादा विकसित है, जरूरी नहीं कि बाहर के तार दिखें।

गुरु मंत्रदीक्षा देते समय ऐसी कुछ आध्यात्मिक तरंगें, आध्यात्मिक तार जोड़ देते हैं कि शिष्य हजार मील दूर हो, दस हजार मील दूर हो और शिष्य को कोई समस्या है, कोई प्रश्न है या कोई मुसीबत आ गयी है तथा वह गुरु का सच्चे हृदय से सहज चिंतन करता है तो उसी समय वहाँ सूक्ष्मरूप से मदद पहुँच जाती है। जैसे मोबाइल छोटा-सा यंत्र है, यहाँ बटन दबाओ तो अमेरिका में रिंग बजती है और बात हो सकती है। यह तो यंत्र है, यंत्र से तो मंत्र की बड़ी महान शक्तियाँ हैं।

ये मंत्र-विज्ञान और संकल्पशक्ति आपके अंतःकरण में भी बीजरूप में छुपी हैं। जैसे वटवृक्ष के बीज में वटवृक्ष छुपा है, ऐसे ही जीवात्मा में सारे ब्रह्मांड का परमात्मा छुपा है। बीज को तोड़ोगे, उसका जर्रा-जर्रा मेज पर रख दोगे, कतरा-कतरा कर दोगे और सूक्ष्मदर्शक (माइक्रोस्कोप) उठाकर देखोगे तो भी उसमें पत्ते नहीं दिखेंगे, जटाएँ नहीं दिखेंगी, डालियाँ नहीं दिखेंगी, फल नहीं दिखेंगे, फूल नहीं दिखेंगे लेकिन उसमें सब छुपा है; बस, उसे धरती मिल जाय, खाद और पानी मिल जाय, थोड़ी देखभाल मिल जाय। ऐसे ही तुमने साधना की तो धरती मिल रही है और सत्संग व संयम का खाद-पानी भी तुम पा रहे हो। कभी-कभार गुरु के द्वार आ जाओ देखरेख करवाने के लिए। कहीं गलती होगी तो गुरु की कड़ी नजर होगी और ठीक होगा तो गुरु की प्रसन्नता से पता चल जायेगा कि सही मार्ग में आगे बढ़ रहे हैं, वास्तव में उन्नत हो रहे हैं।

सद्गुरु पकड़ाते ज्ञान की डोरी, करते भव से पार

- स्वामी शिवानंदजी सरस्वती

साधकों के पथ-प्रदर्शन हेतु सद्गुरु के रूप में भगवान स्वयं पधारते हैं। ईश्वरकृपा ही गुरु के रूप में प्रकट होती है। यही कारण है कि सद्गुरु-दर्शन को भगवद्दर्शन की संज्ञा दी जाती है। गुरु भगवत्स्वरूप होते हैं, उनकी उपस्थिति सबको पवित्र करती है।
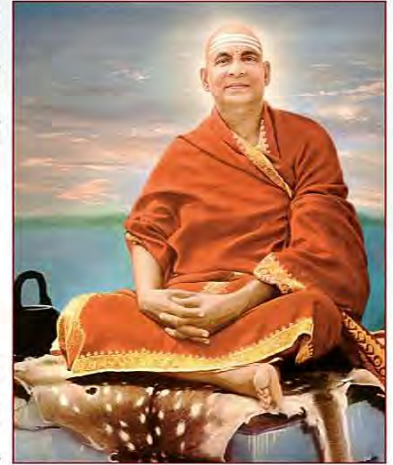
ब्रह्मस्वरूप सद्गुरु ही
मानव के सच्चे सहायक

मानव को मानव द्वारा ही शिक्षा दी जा सकती है इसलिए भगवान भी मानव-शरीर के द्वारा ही शिक्षा देते हैं। मानवीय आदर्श की पूर्णता गुरु में ही हो सकती है। उन्हींके आदर्शों के साँचे में अपने-आपको ढालकर आपका मन स्वतः ही स्वीकार करेगा कि यही महान व्यक्ति पूजा-अर्चना के योग्यतम अधिकारी हैं।

सद्गुरु तो स्वयं ब्रह्म ही हैं। वे आनंद, ज्ञान तथा करुणा के सागर हैं, आत्मारूपी जहाज के नायक हैं। वे भवसागर में डूबने से बचाकर ज्ञान की डोरी से तुम्हें बाहर निकालते हैं। सभी बाधाएँ तथा चिंताएँ नष्ट करके दिव्यता की ओर तुम्हारा पथ-प्रदर्शन करते हैं। तुम्हारी हीन, तामसिक प्रवृत्तियों को रूपांतरित करने में केवल सद्गुरु ही समर्थ हैं। अज्ञान के आवरण को हटाकर वे ही तुम्हें दिव्य तथा अमर बना देते हैं। उनको मनुष्य नहीं मानना चाहिए, यदि कहीं ऐसा समझते रहे तो आप पशुवत् ही रहेंगे। अपने गुरु की सदैव पूजा तथा आदर-सत्कार करिये, भावना से ओतप्रोत रहिये। गुरु ही ईश्वर हैं, उनके वाक्य को भगवद्वाक्य मानिये। वे भले ही शिक्षा न दें, उनकी उपस्थिति ही प्रेरणा-स्रोत होने के कारण प्रगति-पथ की ओर प्रेरित करती है। उनके सत्संग से आत्मप्रकाश की प्राप्ति होती है। उनके सान्निध्य में रहने से ही आध्यात्मिक विद्या आ जाती है। यद्यपि सद्गुरुदेव मोक्ष का द्वार हैं, इन्द्रियातीत सत् तथा चित् के दाता हैं परंतु उसमें प्रवेश करने का उद्यम तो शिष्य को स्वयं ही करना होगा। गुरु सहायता देंगे किंतु साधना करने का उत्तरदायित्व शिष्य पर ही रहेगा।

सद्गुरु में अनन्य निष्ठा

जलप्राप्ति के लिए अनेक उथले गड्ढे खोदने का विफल प्रयास नहीं करिये, वे तो शीघ्र ही सूख जायेंगे। एक ही स्थान पर यथाशक्ति परिश्रम केन्द्रित कर पर्याप्त गहरा गड्ढा खोदिये, आपको पर्याप्त स्वच्छ तथा शुद्ध जल मिलेगा जो शीघ्र समाप्त नहीं होगा। ठीक इसी प्रकार एक ही गुरु द्वारा ज्ञानामृत का पान करिये, उन्हींके चरणों में निष्ठापूर्वक जीवनपर्यंत वास करिये। श्रद्धारहित होकर एक संत से दूसरे के पास कौतूहलवश भागते रहने से कोई लाभ नहीं। वेश्या की नाईं मन को बदलते न रहिये, एक ही सद्गुरु के निर्देशों का सप्रीति पालन कीजिये। एक चिकित्सक से तो उपचारार्थ नुस्खा मिलता है। दो चिकित्सकों से परामर्श लिया जा सकता है परंतु तीन चिकित्सकों से तो हम अपनी मृत्यु स्वयं निमंत्रित करते हैं। ऐसे ही अनेक गुरुओं के चक्कर में पड़कर अनेक विधियाँ अपनाने से हम स्वयं भ्रमित हो जायेंगे। अतः एक सद्गुरु की शरण लेकर उन्हींमें अनन्य निष्ठा रख के उनके उपदेशों का, आदेशों का दृढ़तापूर्वक पालन कीजिये। श्रद्धा सबमें रख सकते हैं पर निष्ठा तथा अनन्यता एक के प्रति ही हो सकती है इसलिए आदर सबका करिये किंतु अनुसरण करिये एक सद्गुरु के ही आदेशों का, तभी आपकी प्रगति सुपथ पर होती जायेगी।

करोड़ों का जीवन सँवारनेवाले संत के साथ ऐसा क्यों ?

- श्रीमती नूतन भल्ला, स्पेशल एग्जीक्यूटिव ऑफिसर, मुंबइ

अभी हाल ही में झूठे केस में फँसाये गये शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वतीजी न्यायालय से बाइज्जत बरी हुए और स्वामी नित्यानंदजी को बदनाम करने के लिए दिखायी गयी सेक्स सीडी फर्जी निकली। लेकिन वर्षों पहले जब इन पर आरोप लगे, तब से अब तक मीडिया ने जो इन संतों की इतनी बदनामी कर डाली, उसकी भरपाई कौन और कैसे करेगा ? करोड़ों हिन्दुओं की आस्था को जो ठेस पहुँची, इसका जिम्मेदार कौन है ?

विदेशी ताकतें जो भारत को तोड़ना चाहती हैं, वे भोले-भाले लोगों को आज इस प्रकार भ्रमित कर रही हैं कि भारतवासियों को उनके ही साधु-संतों से नफरत हो जाय। जब संतों के ऊपर झूठे आरोप लगते हैं तो मीडियावाले एक दिन में ८-८ घंटे की ब्रेकिंग न्यूज चलाते हैं लेकिन जब वे न्यायालय से बाइज्जत बरी होते हैं तो मात्र १-२ मिनट भी मुश्किल से उस खबर को चलाते हैं। मीडिया के इस पक्षपातपूर्ण रवैये से भारत के बुद्धिजीवी लोगों का तो मीडिया से विश्वास ही उठ गया है। मीडिया ने गैंगरेप, हत्या आदि की खबरें दिनभर चला-चलाकर भारत की छवि को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अत्यंत खराब कर दिया है। अरे, भारत में बापूजी जैसे संतों द्वारा कितने निष्काम सेवाकार्य अविरत चल रहे हैं ! ये भी तो कभी मीडियावालों को दिखाने चाहिए। १४ फरवरी के दिन लाखों-करोड़ों बच्चे अपने माता-पिता की आरती-पूजा कर जीवन में आगे बढ़ने हेतु उनसे आशीष पाते हैं... ये खबरें दिखाने के लिए मीडियावालों को फुर्सत नहीं है क्या ?

आज लगभग ७-८ करोड़ लोग बापूजी के कारण अच्छाई के मार्ग पर चल रहे हैं। ये लोग अगर बापूजी से जुड़े नहीं होते तो इन्हीं में से न जाने कितने लोग तनावग्रस्त, व्यसनी और क्या-क्या होते ! आकलन कीजिये कि जिन्होंने ७-८ करोड़ लोगों को नेकी की राह व स्वदेशी सिद्धांत पर चलना सिखाया हो, उन महापुरुष का इस देश की सुख, शांति व समृद्धि में कितना बड़ा योगदान है !

आज बापूजी की प्रेरणा से देश के विभिन्न स्थानों पर गरीबों में अनाज, वस्त्र, मिठाई, बर्तन आदि जीवनोपयोगी सामग्रियों का वितरण, गौ-सेवा आदि की जा रही है। यह सब कानून के डर से नहीं अपितु लोगों की अच्छाई काम कर रही है, जिसे बापूजी जैसे संतों ने जागृत किया है। ऐसे संतों की बिकाऊ मीडियावाले दिन-रात आलोचना करते रहते हैं। कानून अगर बापूजी के लिए है तो मीडियावालों के लिए भी है। उन्हें लोगों की भावनाओं के साथ छेड़छाड़ करने का अधिकार नहीं है।

आज करोड़ों लोग जो बापूजी को मानते हैं क्या वे सब-के-सब अंधश्रद्धालु हैं ? अरे, कोई ५००-१००० लोगों को भ्रमित किया जा सकता है लेकिन क्या ७-८ करोड़ लोगों को कोई भ्रमित कर सकता है ? अरे, स्वयं भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयीजी जैसे उच्च कोटि के बुद्धिजीवी बापूजी के पास २ घंटे सत्संग सुनने के लिए बैठे रहे। ऐसे और भी कई हैं।

करोड़ों लोगों को जीवन जीने की कला सिखानेवाले बापूजी जैसे संतों के सम्मान की सुरक्षा के लिए भारत के कानून में ठोस प्रावधान होने चाहिए ताकि कोई भी इनकी प्रतिष्ठा और छवि के साथ खिलवाड़ करने का दुस्साहस न कर पाये।

भारतवासियों से अपील है कि आप किसी भी विदेशी षड्यंत्र के शिकार न बनें। हमें जिन संतों ने ध्यान-भजन सिखाया, परिवार में आपसी सौहार्द सिखाया हम उनसे जुड़े रहें व लाभ उठाते रहें।

सुप्रचार करते मेरे प्यारे साधक

- पूज्य बापूजी

(ऋषि प्रसाद जयंती : १२ जुलाई)
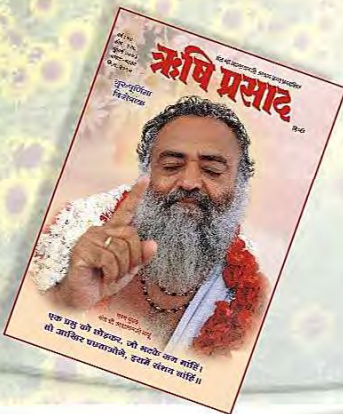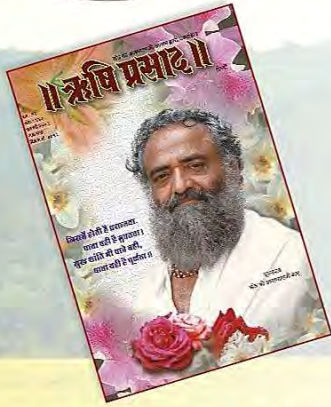
कुप्रचार के युग में सुप्रचार करने का साहस लल्लू-पंजू का नहीं होता है। महात्मा बुद्ध के सेवकों का नाम सुनकर लोग पत्थर मारते थे फिर भी बुद्ध के सेवकों ने बुद्ध के विचारों का प्रचार किया। ऐसे ही मेरे 'ऋषि प्रसाद' के ऐसे लाड़ले-लाड़लियाँ, शिष्य-शिष्याएँ हैं कि घर-घर जाकर 'ऋषि प्रसाद', 'ऋषि दर्शन' के सदस्य बनाते हैं। आपको भी सदस्य बनाने का कोई अवसर मिले तो चूकना नहीं। लोगों को भगवान और संत-वाणी से जोड़ना यह अपने-आपमें बड़ी भारी सेवा है।

तीरथ नहाये एक फल, संत मिले फल चार।
सद्गुरु मिले अनंत फल, कहत कबीर विचार।।

महापुरुष का संदेशा देकर कई पतित आत्माओं को पुण्यात्मा बनाते-बनाते निंदा भी हो गयी तो क्या है! वैसे ही एक दिन सब कुछ चले जानेवाला है।

जिसका कर्मयोग सफल हो गया तो भक्ति तो उसके घर की ही चीज है, ज्ञान तो उसका स्वाभाविक हो गया, देह का अभिमान तो चला ही गया। आद्य शंकराचार्य भगवान कहते हैं :

देहाभिमाने गलिते विज्ञाते परमात्मनि।
यत्र यत्र मनो याति तत्र तत्र समाधयः।।

'देहाभिमाने गलिते' जिसका देह का अध्यास गलित हो गया, 'विज्ञाते परमात्मनि' शरीर को मैं मानने का अध्यास चला गया तो उसने परमात्मा-आत्मा को 'मैं' जान लिया न! 'यत्र यत्र मनो याति' उसका तो जहाँ-जहाँ मन जायेगा, 'तत्र तत्र समाधयः' उसे समाधान मिलेगा, संतोष मिलेगा कि संसार स्वप्न है, उसको जाननेवाला सत्-चित्-आनंद मेरा अपना स्वभाव है।

यह बात तो शिवजी ने भी पार्वती को कही :

उमा कहउँ मैं अनुभव अपना।
सत हरि भजनु जगत सब सपना।।

(श्री रामचरित. अर.कां. : ३८.३)

अगर स्वप्न जैसे संसार में स्वप्न जैसे शरीर से भगवान और समाज को जोड़ते-

जोड़ते हमारा पैसा चला जाय या अहं चला जाय तो भी सौदा सस्ता है।

महात्मा बुद्ध के लिए दुष्ट लोगों ने कितनी साजिशें गढ़ीं, कितना कुप्रचार किया ! बुद्ध के जो लल्लू-पंजू सेवक थे वे तो भाग गये लेकिन ऐसे भी सेवक रहे कि 'भंते ! मैं जाऊँगा आपका संदेश ले के।' कोई चीन पहुँचा तो कोई जापान पहुँचा तो कोई हिन्दुस्तान में घूमा। हमारे पास भी ऐसे पुण्यात्मा हैं। जैसे बुद्ध के पास भिक्षुक थे ऐसे हमारे पास 'ऋषि प्रसाद' और 'ऋषि दर्शन' के पुण्यात्मा हैं, इनकी सदस्यता बढ़ती जायेगी।

संत और संत के सेवकों को सतानेवालों को प्रकृति अपने ढंग से यातना देती है और संत की सेवा, समाज की सेवा करनेवाले ऋषि प्रसाद वालों को गुरु और भगवान अपने ढंग की प्रसादी देते हैं।

वाहवाही व चाटुकारी के लिए तो कोई भी सेवा कर लेता है। रोटी का टुकड़ा देखकर तो कुत्ता भी पूँछ हिला देता है लेकिन मान-अपमान, गर्मी-ठंडी, आँधी-तूफान सहकर तो सद्गुरु के पुण्यात्मा शिष्य ही सेवा कर पाते हैं।

ऋषि प्रसाद और ऋषि दर्शन के सदस्य बनानेवाले मेरे साधक-साधिकाएँ दृढ़ संकल्पवान, दृढ़ निष्ठावान हैं। जैसे बापू अपने गुरुकार्य में दृढ़ रहे ऐसे ही बापू के बच्चे, नहीं रहते कच्चे !

****

(पृष्ठ २२ से 'मेरी ...' का शेष) बड़ा सारगर्भित व्याख्यान देने लगता है ! मानव-समाज का सच्चा हितैषी तो वह है जो इन कठिनाइयों से बाहर निकलने का उपाय बताये। यह तो इस प्रकार है कि कोई दार्शनिक एक डूबते हुए लड़के को गम्भीर भावों से उपदेश दे रहे थे तो लड़के ने कहा : ''पहले मुझे पानी से बाहर निकालिये फिर उपदेश दीजिये।'' बस ठीक इसी तरह भारतवासी भी (उन विदेशी व्याख्याताओं से) कहते हैं : ''हम लोगों ने बहुत व्याख्यान सुन लिये, बहुत-सी संस्थाएँ देख लीं, बहुत से पत्र पढ़ लिये, अब तो ऐसा मनुष्य चाहिए जो अपने हाथ का सहारा दे, हमें इन दुःखों से बाहर निकाले। कहाँ है वह मनुष्य जो हमसे वास्तविक प्रेम करता है, जो हमारे प्रति सच्ची सहानुभूति रखता है ?''

बस, उसी आदमी की हमें जरूरत है।

(ऐसा महान पुरुष हमने देखा है पूज्य बापूजी के रूप में, जिनको साजिश के तहत अत्याचार करके जेल में डाला गया है। - श्री आर.एन. ठाकुर) (क्रमशः)

****

ज्ञानी की मौज

ज्ञानी की मौज होती है। मौज आ गयी तो बाहर डंडा उठा लिया और मौज आ गयी तो हाथ भी जोड़ लिये... किन्तु अन्तःकरण से तो उसी परब्रह्म परमात्मा में ज्यों-के-त्यों स्थित रहते हैं। ऐसे होते हैं ब्रह्मवेत्ता।

तस्य तुलना केन जायते।

उनकी तुलना किनसे की जाये ? अष्टावक्रजी महाराज कहते हैं :

धीरो न द्वेष्टि संसारमात्मानं न दिदृक्षति।
हर्षामर्षविनिर्मुक्तो न मृतो न च जीवति ॥

'हर्ष-शोकरहित ज्ञानी संसार के प्रति न द्वेष करता है और न आत्मा को देखने की इच्छा करता है। वह न मरा हुआ है और न ही जीता है।' (अष्टावक्र गीता : १८.८३)

न मृतो न च जीवति।

शरीर के जीवन को वह अपना जीवन नहीं मानता और शरीर के मरने से वह अपनी मौत नहीं मानता। अखा भगत ने भी कहा है :

राज्य करे रमणी रमे के ओढ़े मृग छाल।
जो करे सब सहज में सो साहेब का लाल ॥

सत्य की हुई जीत
सूरत पुलिस को लेनी पड़ी याचिका वापस

६ अक्टूबर को जहाँगीरपुरा (सूरत) में श्री नारायण साँईंजी के खिलाफ यौन-उत्पीड़न का झूठा मामला दर्ज किया गया था । साँईंजी ने ११ अक्टूबर को अग्रिम जमानत याचिका लगायी थी । याचिका की नोटरी दिल्ली में की गयी थी । पुलिस ने याचिका पर नोटरी के दौरान किये गये साँईंजी के हस्ताक्षर को फर्जी बताया था और माँग की थी कि साँईंजी के ऊपर जालसाजी का केस लगे । इस तरह असली हस्ताक्षर को नकली बताकर मीडिया को हत्था बना के निर्दोष साँईंजी को खूब बदनाम किया गया । फर्जी केस को और मजबूत करने की, न्यायपालिका व जनता में नारायण साँईं एवं आश्रम के लिए नकारात्मक भावना भरने की और केस व जमानत याचिका का निर्णय उनके खिलाफ लाने की पूरी कोशिश की गयी थी । पर साँच को आँच नहीं, झूठ को पैर नहीं । देर-सवेर सत्य उजागर होता ही है ।

साँईंजी के वकील ने हस्ताक्षर की हस्ताक्षर-विशेषज्ञ से जाँच करवाने की माँग की । उस रिपोर्ट से यह साबित हो गया कि वे हस्ताक्षर साँईंजी के ही थे । इसलिए सूरत पुलिस को साँईंजी के खिलाफ उपरोक्त मामला दर्ज करने की माँग करनेवाली याचिका वापस लेनी पड़ी है ।

(संदर्भ : 'राजस्थान पत्रिका' व 'दबंग दुनिया' से)

पुलिस द्वारा हस्ताक्षर को फर्जी बताकर विवाद खड़ा किया जाने से एवं मीडिया के दुष्प्रचार के कारण न्यायालय में साँईंजी की अग्रिम जमानत याचिका की कार्यवाही में विलम्ब हुआ और उस दरम्यान पुलिस ने साँईंजी को गिरफ्तार कर लिया । अब जबकि सत्य सामने आ चुका है तो क्या पुलिस व मीडिया साँईंजी को हुए नुकसान की क्षतिपूर्ति कर सकेंगे ?

उल्लेखनीय है कि नारायण साँईंजी ने ११ अक्टूबर को अपने संवैधानिक अधिकार के तहत अग्रिम जमानत याचिका दायर की थी । परंतु मीडिया ने संविधान को ताक पर रखते हुए साँईंजी को भगोड़ा घोषित करके उनका कई हफ्तों तक घोर दुष्प्रचार किया था । बाद में सूरत पुलिस द्वारा भी उन्हें भगोड़ा घोषित कर उनके खिलाफ गैर-जमानती वॉरंट निकाला गया था, जो कि देश के संविधान की सीधी तौर पर अवमानना थी । इस पर गुजरात उच्च न्यायालय ने श्री नारायण साँईंजी के खिलाफ गैर-जमानती वॉरंट को रद्द करते हुए घोषित किया था कि 'साँईंजी भगोड़े नहीं थे, उनको भगोड़ा कहना बिल्कुल गलत था ।' इस प्रकार भी जो साँईंजी की बदनामी की गयी, उनके ऊपर अन्याय किया गया, उसकी भरपाई पुलिस और मीडिया कर पायेंगे ?

कबीरजी ने कहा है : सुख के माथे सिल पड़े जो नाम हृदय से जाये ।
बलिहारी वा दु:ख की जो पल पल नाम जपाय ।।

हमें पद-पद पर भले विपत्तियाँ आयें, आती रहें क्योंकि विपत्ति में ही निश्चित रूप से प्रभु के दर्शन हुआ करते हैं और दर्शन हो जाने पर फिर जन्म-मृत्यु के चक्र में नहीं जाना पड़ता है ।

स्वामी रामतीर्थ कहा करते थे : ''हे प्रभु ! मुझे अपने मित्रों से बचाओ और सुख-सुविधाओं से बचाओ ।''

यह सुनकर एक बार उनके शिष्य पूरणसिंह ने कहा : ''गुरुजी ! यह आप क्या कह रहे हैं ? शत्रुओं से और विपत्तियों से बचाओ ऐसी प्रार्थना की जाती है और आप कहते हैं कि मित्रों से बचाओ !''

रामतीर्थ ने कहा : ''मैं गलती से प्रार्थना नहीं कर रहा हूँ... ठीक ही कर रहा हूँ । सुख हमारा समय हड़प कर लेता है और जगत में सत्यबुद्धि कराता है । मित्र हमारा समय खा जाते हैं और जगत में आसक्ति करा देते हैं । जब-जब मन फँसता है तो मित्र में फँसता है, सुख में फँसता है । शत्रु और दु:ख में क्या फँसेगा ? इसलिए मैं मित्रों और सुख-सुविधाओं से बचने के लिए ही प्रभु से प्रार्थना कर रहा हूँ ।''

वैज्ञानिक अनुसंधानों का आधार है देवभाषा संस्कृत

(संस्कृत दिवस : १० अगस्त)

देवभाषा संस्कृत सभी भाषाओं की जननी है। वेद भी इसी भाषा में होने के कारण इसे वैदिक भाषा भी कहते हैं। 'संस्कृत' शब्द का अर्थ होता है - परिष्कृत, पूर्ण एवं अलंकृत। संस्कृत में बहुत कम शब्दों में अधिक आशय प्रकट कर सकते हैं। इसमें जैसा लिखा जाता है, वैसा ही उच्चारण किया जाता है। संस्कृत में भाषागत त्रुटियाँ नहीं मिलती हैं।

भाषाविद् मानते हैं कि विश्व की सभी भाषाओं की उत्पत्ति का तार कहीं-न-कहीं संस्कृत से जुड़ा है। यह सबसे पुरानी एवं समृद्ध भाषा है। विभिन्न भाषाओं में संस्कृत के शब्द बहुतायत में पाये जाते हैं। कई शब्द अपभ्रंश के रूप में हैं तो कई ज्यों-के-त्यों हैं। संस्कृत भाषा का व्याकरण अत्यंत परिमार्जित एवं वैज्ञानिक है।

वैज्ञानिकों का भी संस्कृत को समर्थन

संस्कृत की वैज्ञानिकता बड़ी-बड़ी वैज्ञानिक खोजों का आधार बनी है। वेंकट रमन, जगदीशचन्द्र बसु, आचार्य प्रफुल्लचन्द्र राय, डॉ. मेघनाद साहा जैसे विश्वविख्यात विज्ञानी संस्कृत के धुरंधर विद्वान भी थे। इन सबको संस्कृत भाषा से अत्यधिक प्रेम था और वैज्ञानिक खोजों के लिए ये संस्कृत को आधार मानते थे। इनका कहना था कि संस्कृत का प्रत्येक शब्द वैज्ञानिकों को अनुसंधान के लिए प्रेरित करता है। प्राचीन ऋषि-महर्षियों ने विज्ञान में जितनी उन्नति की थी, वर्तमान में उसका कोई मुकाबला नहीं कर सकता। ऋषि-महर्षियों का सम्पूर्ण ज्ञान-सार संस्कृत में निहित है। आचार्य राय विज्ञान के लिए संस्कृत की शिक्षा आवश्यक मानते थे। जगदीशचन्द्र बसु ने अपने अनुसंधानों के स्रोत संस्कृत में खोजे थे। डॉ. साहा अपने घर के बच्चों की शिक्षा संस्कृत में ही कराते थे और एक विज्ञानी होने के बावजूद काफी समय तक वे स्वयं बच्चों को संस्कृत पढ़ाते थे।

संस्कृत शब्दों द्वारा वैज्ञानिक अनुसंधान

एक बार संस्कृत के महापंडित आचार्य कपिल देव शर्मा ने जगदीशचन्द्र बसु से पूछा : ''वनस्पतियों में प्राण होने का अनुसंधान करने की प्रेरणा आपको कहाँ से मिली ?''

उत्तर के बजाय बसु ने प्रश्न किया : ''आप संस्कृत का एक ऐसा शब्द बताइये जिससे बहुत-से पेड़-पौधों का बोध हो।''

आचार्य शर्मा को 'शस्यश्यामलां मातरम्।' ध्यान आ गया। उन्होंने कहा : ''शस्य।''

''शस्य किस धातु से बना है ?''

''शस् धातु से।''

''शस् का अर्थ ?''

''हत्या करना।''

''तो शस्य का अर्थ क्या हुआ ?''

''जिनकी हत्या करना सम्भव हो।''

आचार्य शर्मा से बसु महोदय ने मुस्कराकर कहा : ''यदि वनस्पतियों में प्राण न होते तो उन्हें हत्या योग्य कहा ही न जाता। संस्कृत के 'शस्य' शब्द ने ही मुझे इस अनुसंधान के लिए प्रेरित किया।'' उन्होंने ऐसे कई संस्कृत शब्दों के बारे में आचार्य शर्मा को बताया जो उन्हें अनुसंधान में मददरूप साबित हुए।

भारतीय वैज्ञानिकों के साथ पाश्चात्य विद्वानों ने भी संस्कृत की समृद्धता को स्वीकारा है। सर विलियम जोन्स ने २ फरवरी, १७८६ को एशियाटिक सोसायटी के माध्यम से सारे विश्व में यह घोषणा कर दी थी : ''संस्कृत एक अद्भुत भाषा है। यह ग्रीक से अधिक पूर्ण है, लैटिन से अधिक समृद्ध और दोनों ही भाषाओं से अधिक परिष्कृत है।''

आधुनिक विज्ञान के लिए
संस्कृत बन सकती है वरदानरूप

वर्तमान समय में संस्कृत भाषा विश्वभर के विज्ञानियों के लिए शोध का विषय बन गयी है। यूरोप की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका 'फोर्ब्ज' द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार 'संस्कृत भाषा कम्प्यूटर के लिए सबसे उत्तम भाषा है तथा समस्त यूरोपीय भाषाओं की जननी है।'

आधुनिक विज्ञान सृष्टि के रहस्यों को सुलझाने में बौना पड़ रहा है। अलौकिक शक्तियों से सम्पन्न मंत्र-विज्ञान की महिमा से विज्ञान आज भी अनभिज्ञ है। उड़न तश्तरियाँ कहाँ से आती हैं और कहाँ गायब हो जाती हैं - इस प्रकार की कई बातें हैं जो आज भी विज्ञान के लिए रहस्य हैं। प्राचीन संस्कृत ग्रंथों से ऐसे कई रहस्यों को सुलझाया जा सकता है।

विमान विज्ञान, नौका विज्ञान से संबंधित कई महत्त्वपूर्ण सिद्धांत हमारे ग्रंथों से प्राप्त हुए हैं। इस प्रकार के और भी अनगिनत सूत्र हमारे ग्रंथों में समाये हुए हैं, जिनसे विज्ञान को अनुसंधान के क्षेत्र में दिशानिर्देश मिल सकते हैं। आज अगर विज्ञान के साथ संस्कृत का समन्वय कर दिया जाय तो अनुसंधान के क्षेत्र में बहुत उन्नति हो सकती है।

हिन्दू धर्म के प्राचीन महान ग्रंथों के अलावा बौद्ध, जैन आदि धर्मों के अनेक मूल धार्मिक ग्रंथ भी संस्कृत में ही हैं।

संस्कारी जीवन की नींव : संस्कृत

वर्तमान समय में भौतिक सुख-सुविधाओं का अम्बार होने के बावजूद भी मानव-समाज अवसाद, तनाव, चिंता और अनेक प्रकार की बीमारियों से ग्रस्त है क्योंकि केवल भौतिक उन्नति से मानव का सर्वांगीण विकास सम्भव नहीं है, इसके लिए आध्यात्मिक उन्नति अत्यंत जरूरी है।

जिस समय संस्कृत का बोलबाला था उस समय मानव-जीवन ज्यादा संस्कारित था। यदि समाज को फिर से वैसा संस्कारित करना हो तो हमें फिर से सनातन धर्म के प्राचीन संस्कृत ग्रंथों का सहारा लेना ही पड़ेगा। हमारे प्राचीन संस्कृत ग्रंथ शाश्वत मूल्यों एवं व्यावहारिक जीवन के अनमोल सूत्रों के भंडार हैं, जिनसे लाभ लेकर वर्तमान समाज की सच्ची और वास्तविक उन्नति सम्भव है।

संस्कृत के शब्द चित्ताकर्षक एवं आनंददायक भी हैं, जैसे - सुप्रभातम्, सुस्वागतम्, 'मधुराष्टकम्' के शब्द आदि। बोलचाल में यदि संस्कृत का प्रयोग किया जाय तो हम आनंदित रहते हैं। परंतु अफसोस कि वर्तमान में पाश्चात्य अंधानुकरण से संस्कृत भाषा का प्रयोग बिल्कुल बंद-सा हो गया है। संस्कृत के उत्थान के लिए हमें अपने बोलचाल में संस्कृत का प्रयोग शुरू करना होगा। बच्चों को पाठ्यक्रम में संस्कृत भाषा अनिवार्य रूप से पढ़ायी जानी चाहिए और उन्हें इसे पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। विद्यार्थियों को वैदिक गणित का लाभ दिलायें तो वे गणित के क्षेत्र में बहुत आगे बढ़ सकते हैं।

संस्कृत भाषा हमारे देश व संस्कृति की पहचान है, स्वाभिमान है। हमें इस भाषा को विलुप्त होने से बचाना होगा।

स्वास्थ्यवर्धक चोकरयुक्त आटा

प्रायः लोग खाना बनाते समय आटे को छानकर चोकर फेंक देते हैं लेकिन उन्हें यह पता नहीं कि चोकर फेंककर उन्होंने आटे के सारे रेशे (फाइबर्स) फेंक दिये हैं। चोकर स्वास्थ्य के लिए बेहद जरूरी है। चोकर के संबंध में शोध कर रहे वैज्ञानिकों ने पाया है कि चोकर रक्त में इम्यूनो-ग्लोब्यूलीन्स की मात्रा बढ़ाता है, जिससे शरीर की रोगप्रतिकारक क्षमता बढ़ती है। इससे रोगप्रतिकारक शक्ति की कमी के कारण उत्पन्न होनेवाले कई कष्टदायक रोग जैसे क्षय (टी.बी.), दमा आदि भी दूर रहते हैं।

चोकरयुक्त आटा खाने के लाभ

(१) गेहूँ का चोकर कब्ज हटाने में रामबाण का काम करता है। इसके प्रयोग से आँतों में चिपका हुआ मल साफ होता है, गैस नहीं बनती, आँतें सुरक्षित व पेट मुलायम रहता है।

(२) चोकर आमाशय के घावों को ठीक करता है।

(३) रक्तवसा (कोलेस्ट्रॉल) को संतुलित करके हृदयरोग से भी रक्षा करता है।

(४) आंत्रपुच्छशोथ (अपेंडिसाइटिस), अर्श (बवासीर) तथा भगंदर से बचाता है। बड़ी आँत एवं मलाशय कैंसर से भी रक्षा होती है।

(५) मोटापा घटाने तथा मधुमेह निवारण में भी अचूक कार्य करता है।

अतः अति लाभकारी चोकरयुक्त आटे का ही प्रयोग करें, भूलकर भी इसे न फेंकें।

****

सरल प्रयोग

* भगवान धन्वंतरि सुश्रुतजी से कहते हैं : ''मनुष्य को सदा 'हिताशी' (हितकारी पदार्थों को ही खानेवाला), 'मिताशी' (परिमित भोजन करनेवाला) तथा 'जीर्णाशी' होना चाहिए अर्थात् पहले खाये हुए अन्न का परिपाक हो जाने पर ही पुनः भोजन करना चाहिए।''

* बेल के पत्ते, धनिया व सौंफ को समान मात्रा में लेकर कूट लें। १० से २० ग्राम यह चूर्ण शाम को १०० ग्राम पानी में भिगो दें और सुबह पानी को छानकर पी जायें। इसी प्रकार सुबह भिगोकर शाम को पियें। इससे स्वप्नदोष कुछ ही दिनों में ठीक हो जायेगा। यह प्रमेह एवं स्त्रियों के प्रदर में भी लाभदायक है।

* घी तथा दूध से शिवलिंग को स्नान कराने से मनुष्य रोगहीन हो जाता है।

* खाँड़युक्त दूध पीनेवाला सौ वर्षों की आयु प्राप्त करता है।

* दीर्घजीवी होने की इच्छावाले को सुबह खाली पेट १० से १५ ग्राम त्रिफला घृत के साथ ५ से १० ग्राम शहद का सेवन करना चाहिए।

****

आरोग्य के मूलभूत सिद्धांत

आरोग्य के मूलभूत सिद्धांत, मीठे से कफ ऊपजे, खट्टे रस से पित्त। कटु उपजावे वात को, याद राखिये नित्त।।

खट्टा खारा औ' मधुर, करे वायु का ह्रास। कटुक कसैला चरपरा, कफ का करे विनाश।।

कोप बढ़ावे वात को, तीखा, कड़वा, कषाय। मधुर, शीत, लघु१ आदि से, पित्त शमन हो जाय।।

वात कोप गति बारिश में, पित्त शरद ऋतु माय। कफ गति बढ़े बसंत में, कीजे शमन उपाय।।

आँखों की समस्याओं और नेत्रज्योति-वृद्धि के उपाय

लगातार कम्प्यूटर स्क्रीन तथा टीवी देखने, प्रदूषित वातावरण, आहार में पोषक तत्त्वों की कमी तथा अन्य कारणों से आँखों में जलन, पानी गिरना, कम दिखाई देना, आँखों में जाले, कम उम्र में ही चश्मा लग जाना आदि समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं । ये समस्याएँ आगे जाकर आँखों को गम्भीर नुकसान पहुँचा सकती हैं ।

आँखों की समस्याओं से बचने के नुस्खे

(१) रोज दिन में दो-तीन बार मुँह में पानी भरकर आँखों पर स्वच्छ, शीतल पानी के छींटें मारें । इससे आँखों की सारी गर्मी पानी के द्वारा बाहर निकल जाती है ।

(२) आँखों में जलन हो या धूप से आये हों तो बर्फ के पानी की पट्टियाँ आँखों के ऊपर रखें ।

(३) पैर के तलवों पर घी की मालिश करके सोयें ।

नेत्रज्योति बढ़ाने के सरल प्रयोग

(१) हाथों को कंधों की ऊँचाई तक शरीर के अगल-बगल उठायें । अँगूठों को ऊपर की ओर रखें । सिर एवं चेहरे को बिना घुमाये आँखों को बायें हाथ के अँगूठे पर फिर दायें हाथ के अँगूठे पर केन्द्रित करें । हर तरफ १५-१५ सेकंड तक दृष्टि केन्द्रित करें । इसे १५ से २० बार करें । इसके बाद २ मिनट तक आँखों को हलकी बंद कर उन्हें विश्राम दें ।

(२) दोनों हाथों की हथेलियों को आपस में अच्छी तरह रगड़कर बंद आँखों पर रखें । इस क्रिया से अल्फा तरंगें आँखों के अंदर प्रवेश कर आराम पहुँचाती हैं । (क्रमशः)

सत्य को छिपाया जा सकता है, मिटाया नहीं जा सकता

(संत-सम्मेलन, बरेली)

आचार्य श्री राकेशदासजी, हनुमान गढ़ी, अयोध्या : अब बापूजी बहुत ही जल्दी आनेवाले हैं ऐसा महसूस हो रहा है क्योंकि अब लोगों से और व्याकुलता सही नहीं जाती ।

अपने हृदय को मजबूत बनायें कि 'कोई बरगलाता है तो उसके बहकावे में हम नहीं आयेंगे ।' एक-न-एक दिन सत्य की विजय अवश्य होगी ।

श्री संदीपदासजी महाराज, निर्वाणी अखाड़ा, हरिद्वार : पूज्य बापूजी जैसे महापुरुषों ने इस देश को पश्चिम से आयी हुई आसुरी शक्तियों के प्रभाव से बचा के रखा है । पूज्य बापूजी का छत्तीसगढ़, ओड़िशा आदि क्षेत्रों में, जहाँ धर्मांतरण हो रहा था, वहाँ संस्कृति के प्रचार में विशेष योगदान रहा है । और इसी कारण विधर्मियों ने ऐसे धर्मपुरुष के साथ अन्याय किया ।

स्वामी श्री अमृतदासजी खाकी महाराज, भागवताचार्य, अध्यक्ष, प्रधान संघ, आलमपुर जाफराबाद, श्रीरामानंद मानव सेवा धाम : अंधकार से प्रकाश की ओर ले जानेवाले ही गुरु होते हैं । किसी कमरे में अगर सैकड़ों वर्ष से अँधेरा हो तो उसे मिटाने के लिए सौ वर्ष की जरूरत नहीं है, बस एक मिनट में जा के दीपक जलाओ और सौ वर्ष का अँधेरा मिट जायेगा । यही प्रयास, यही तपस्या श्री आशारामजी महाराज ने की और पूरे विश्व में सनातन धर्म की ध्वजा फहरायी ।

सत्य को छिपाया जा सकता है, सत्य को मिटाया नहीं जा सकता । आज नहीं तो कल सत्य प्रकट होगा, यह निश्चित है ! पूर्व में भी आशारामजी महाराज पर जो आरोप हुए, आज तक एक भी प्रमाणित नहीं हो पाया ।

'ऋषि प्रसाद' की सेवा से प्राणदान

संत आशारामजी बापू अवतारी महापुरुष हैं। मीडियावाले अक्सर आम आदमी के अनुभव की बातों पर यकीन नहीं करते क्योंकि उन्होंने आँखों पर पश्चिमी सभ्यता की परत चढ़ा रखी है। मैं खुद मीडिया में होकर यह सच्चाई बयान कर रहा हूँ।

सन् २०११ में हार्ट-अटैक से मैं बहुत कमजोर हो गया था। शरीर की कमजोरी दिमाग पर भी असर कर गयी। डॉक्टर, वैद्य सभीने हाथ खड़े कर दिये। मैंने मौत को कई बार बेहद करीब से महसूस किया। मैं 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका सेवाधारियों तक पहुँचाने की सेवा करता था। मुझे लगा अब यह सेवा छूट जायेगी। डॉक्टरों के बाद ज्योतिषियों ने भी कह दिया कि "तुम अल्पायु हो, ३२ साल में मर जाओगे।" मैंने सोचा, 'मरने से पहले एक बार बापूजी तक पहुँच जाऊँ।'

रायपुर में गुरुपूनम महोत्सव पर बापूजी से मिलने हेतु मैं लाइन में खड़ा हुआ। परंतु बापूजी मुझ तक आते उसके पहले मेरे हाथ-पैर सुन्न हो गये। मैं चिल्लाया : "बापूजी, बचा लो ! मैं कुछ समय का मेहमान हूँ।" इतना सुनते ही बिजली की फुर्ती से पूज्यश्री मेरे पास पहुँचे और मेरा कॉलर पकड़कर बोले : "मेरे सेवाधारी को मेरी इजाजत के बिना मौत कैसे ले जा सकती है !"

मैंने कहा : "बापूजी ! ज्योतिषी कहते हैं कि तुम जल्दी मरोगे।" बापूजी ने अपने चरणों से कैंसल का चिह्न बनाते हुए आदेशित स्वर में कहा : "मौत नहीं होगी, मैं कैंसल करता हूँ।"

बापूजी का इतना कहना था कि मेरे शरीर में नयी जान आ गयी फिर बापूजी ने 'संजीवनी गोली' मेरे मुँह में डाल दी। आज पूज्य बापूजी की कृपा से मैं जिंदा हूँ। पहले ठीक से चल-फिर नहीं पाता था, अब दौड़ता हूँ। सचमुच, ब्रह्मज्ञानी महापुरुष कालों के काल, साक्षात् महाकाल हैं।

- बी.आर. सिन्हा, वरिष्ठ पत्रकार, जिला पत्रकार संघ, राजनांदगाँव (छ.ग.)

प्रत्यक्ष देखने को मिला बापूजी की निंदा का परिणाम !

हमारे यहाँ एक व्यक्ति पूज्य बापूजी के खिलाफ बहुत गंदी-गंदी, अनर्गल बातें बोलता था। बापूजी के लिए कुछ-का-कुछ, झूठी बकवास लिखनेवाले एक अखबार की प्रति हाथ में लेता और किराने की दुकानें, मंदिर का चौराहा, दूध डेयरी - जहाँ भी जाता, वहाँ वह अखबार दिखाकर उसमें लिखी अनर्गल बातें दोहराता था। गाँव के लोगों को 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका पढ़ने से मना करता था। निगुरों के बीच तो निंदा करता ही था, साधकों के सामने भी निंदा करने की कोशिश करता था।

साधक यही बोलते कि 'हमारे बापूजी की निंदा का फल इसको जरूर मिलेगा, यह पागल ही हो जायेगा।' वह जिस सम्प्रदाय को मानता था, उसके लोग भी उसे समझाते थे कि 'बापूजी उच्च कोटि के संत हैं, उनकी निंदा करना छोड़ दे' लेकिन वह उनकी बात भी नहीं मानता था।

जब बापूजी जेल गये, उस दिन वह बहुत खुशी में भरकर दिनभर कुप्रचार में लगा रहा। उसके बाद १५-२० दिन ही बीते होंगे कि वह पागल हो गया। अब दिन हो या रात, कभी भी कहीं भी चला जाता है। कभी तो जहाँ-जहाँ जाकर वह निंदा करता था, उन्हीं जगहों पर जाकर चक्करें काटने लगता है। घरवालों को उसे ढूँढ़कर लाना पड़ता है। घरवाले भी परेशान हैं और उसे मुसीबत मान रहे हैं। गाँववाले भी कहने लगे हैं कि यह तो बापूजी की निंदा का ही परिणाम है।

- विपुलभाई चौधरी खानपुर (गुज.)

अविरत बह रही है जनहित की गंगा

पूज्य बापूजी के करोड़ों साधकों का जीवन अपने गुरुदेव से प्राप्त मार्गदर्शन का अनुसरण कर निष्काम सेवा की सुवास से महक रहा है। पिछले १० महीनों से षड्यंत्र में फँसाकर पूज्य बापूजी को कारावास में रखे जाने से साधक-समुदाय बहुत व्यथित है लेकिन साधकों ने पूज्य बापूजी से प्राप्त प्रेरणा और सीख पर अमल करते हुए जन-कल्याण के सेवाकार्यों को नहीं छोड़ा है। इसके साथ-साथ गुरुदर्शन की आस मन में लिये साधक पूज्य बापूजी की शीघ्र रिहाई व उत्तम स्वास्थ्य के लिए देशभर में प्रार्थना और संकल्प के साथ जप-अनुष्ठान, हवन-यज्ञ आदि में जुटे हैं। साथ ही संकीर्तन यात्राओं व प्रभातफेरियों के माध्यम से समाज में फैले वैचारिक प्रदूषण को दूर कर पूज्यश्री की निर्दोषता की सच्चाई जन-जन तक पहुँचा रहे हैं।

शीतल जल प्याऊ एवं छाछ व शरबत वितरण सेवाएँ

पूज्य बापूजी के अवतरण दिवस (२० अप्रैल) से देशभर में शुरू हुई शीतल जल प्याऊ एवं छाछ व शरबत वितरण सेवा निरंतर चालू है। कोटा (राज.) में रेलवे स्टेशन पर शरबत एवं जल सेवा का लाभ हजारों लोग ले रहे हैं। दिल्ली में लाजपत नगर, लक्ष्मी नगर, रोहिणी, करोल बाग एवं जंतर-मंतर तथा भावनगर (गुज.), चंडीगढ़, पटियाला (पंजाब), फरीदाबाद व अम्बाला (हरि.), प्रयागराज (उ.प्र.), नासिक (महा.), जम्मू, छिंदवाड़ा (म.प्र.), बाड़मेर (राज.) सहित सैकड़ों स्थानों पर शीतल शरबत एवं जीरा, सेंधा नमक एवं मिश्री युक्त शीतल ताजी छाछ बाँटी जा रही है। शमशाबाद (आं.प्र.) के बस स्टैंड एवं दौसा (राज.) के रेलवे स्टेशन पर शीतल जल प्याऊ सेवा का लाभ लोगों को मिल रहा है। अहमदाबाद में पिछले ३ महीने से नियमित चल रहे छाछ व शरबत वितरण केन्द्र पर अक्सर तरबूज या आम का रस भी पिलाया जाता है।

देवस्नान पूर्णिमा पर घटी अद्भुत घटना

पूर्णिमा पर भुवनेश्वर (ओड़िशा) में विडियो सत्संग, हवन, भंडारे आदि का आयोजन हुआ। यहाँ आरती के बाद एक अद्भुत घटना घटी। भक्तों की करुण पुकार को सुनकर बापूजी के श्रीचित्र से प्रेमाश्रु निकलने लगे जो काफी देर तक चलते ही रहे।

प्रभातफेरियों व संकीर्तन यात्राओं द्वारा जन-जागृति

पूज्य बापूजी हमेशा अपने सत्संगों में सामूहिक भगवन्नाम कीर्तन करवाते रहे हैं। इससे तन-मन पवित्र होकर सुख-शांति का संचार होता है। इससे प्रेरणा पाकर साधक भी गाँवों, कस्बों एवं शहरों में प्रभातफेरियाँ निकाल रहे हैं। गाजियाबाद में लगातार २८४ दिनों से, फरीदाबाद में ११० दिनों से, लखनऊ में १५० दिनों से, भुवनेश्वर (ओड़िशा) में ९७ दिनों से प्रभातफेरियाँ लगातार निकाली जा रही हैं।

अलीगढ़ (उ.प्र.), नासिक (महा.), अहमदाबाद, इंदौर, सागर, भोपाल, देवास (म.प्र.), बूँदी, कोटा, सवाई माधोपुर, करौली, लालसोट, हिण्डौन सिटी, भीलवाड़ा, जोधपुर (राज.), पंडरी तराई - रायपुर (छ.ग.), सिरसा, अम्बाला (हरि.), अमरावती (महा.), करोल बाग (दिल्ली) आदि स्थानों पर प्रभातफेरियाँ तथा महमुदाबाद जि. सीतापुर (उ.प्र.), फरीदाबाद (हरि.), रायपुर (छ.ग.), कृष्णपुर जि. नवसारी (गुज.), नासिक (महा.), करोल बाग (दिल्ली) आदि स्थानों पर भव्य हरिनाम संकीर्तन यात्रा निकालकर तथा सुप्रचार सामग्री का वितरण करके साधक समाज में षड्यंत्र की हकीकत घर-घर तक पहुँचाने में सतत लगे हुए हैं।

विविध सेवाकार्यों पर एक नजर

लखनऊ में गरीबों में भंडारे के साथ वस्त्र, मिठाई एवं बर्तन आदि का वितरण किया गया। ठक्करनगर-अहमदाबाद में गरीबों में अनाज (चावल और गेहूँ) एवं टोपियों के वितरण के साथ खाद्य सामग्री एवं शरबत की बोतलें बाँटी गयीं। धरमपुर एवं गोधरा (गुज.) के गरीबों में अनाज बाँटा गया।

राजकोट आश्रम द्वारा गिरनार तलेटी, जूनागढ़ (गुज.) में सैकड़ों साधु-संतों में विशाल भंडारे के साथ नकद दक्षिणा का वितरण हुआ।

नवसारी (गुज.) एवं फरीदाबाद में साधक-सम्मेलन हुआ। 'महिला उत्थान मंडल' द्वारा औरंगाबाद, अकोला, मालेगाँव, प्रकाशा एवं धुलिया (महा.) व लखनऊ (उ.प्र.) में महिला सर्वांगीण विकास शिविर हुए, जिनमें महिलाओं की समस्याओं के समाधान के साथ सर्वांगीण उन्नति की विभिन्न युक्तियाँ सिखायी गयीं।

दाता तालाब, बीरपुर, जम्मू में वार्षिक मेले के अवसर पर लगी प्याऊ में लाखों की संख्या में लोगों ने शरबत पीकर अपनी प्यास बुझायी। लोगों को सुप्रचार सामग्री भी दी गयी। १ जून को आर.एस. पुरा, जम्मू में व १५ जून को दयाला चक जि. कठुआ (जम्मू-कश्मीर) में भव्य संत-सम्मेलन हुए। इनमें संतों ने पूज्य बापूजी के खिलाफ हो रहे षड्यंत्र का विरोध कर उनकी शीघ्र रिहाई की माँग की।

अविरत चल रहे हैं सामूहिक हवन-यज्ञ, धरने एवं श्री आशारामायण पाठ

पूज्य बापूजी के स्वास्थ्य, दीर्घायु एवं शीघ्र रिहाई हेतु अहमदाबाद, जोधपुर, अनगुल (ओड़िशा) सहित कई आश्रमों में लगातार ९ महीनों से यज्ञ चालू हैं। अहमदाबाद में हर गुरुवार, रविवार एवं पूर्णिमा को ५१ कुंडी यज्ञ के साथ-साथ प्रतिदिन महामृत्युंजय मंत्र का जप, प्रार्थना तथा श्री आशारामायण का पाठ भी होता है।

तपती गर्मी व धूप के बावजूद भी जंतर-मंतर, दिल्ली में पिछले ३०८ दिनों से धरना चालू है। जालंधर में श्री आशारामायण के १०८ पाठ किये गये। औरंगाबाद (महा.) में ७ दिवसीय जप-अनुष्ठान शिविर सम्पन्न हुआ, जिसमें साधक भाइयों, बहनों के अलावा बच्चों ने भी बड़ी संख्या में भाग लिया।

पूज्य बापूजी व श्री नारायण साँईंजी के उत्तम स्वास्थ्य एवं शीघ्र रिहाई के लिए निर्जला एकादशी के दिन विभिन्न स्थानों पर साधकों ने निर्जल उपवास, जप, प्रार्थना एवं हवन किया। देश के विभिन्न स्थानों पर प्रभातफेरियाँ भी निकाली गयीं।

नासिक आश्रम में २८ जून से ४ जुलाई तक सामूहिक जप-अनुष्ठान का आयोजन किया गया है। अहमदाबाद आश्रम में भी २७ जून से ३ जुलाई तक सामूहिक जप-अनुष्ठान एवं हवन का कार्यक्रम रखा गया है।

'उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविरों' से विद्यार्थियों को मिली सुंदर सीख

विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए पूज्य बापूजी की पावन प्रेरणा से ग्रीष्मकालीन छुट्टियों में हर वर्ष देशभर में 'विद्यार्थी उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविर' का आयोजन होता है। इस वर्ष भी अब तक देशभर में सैकड़ों शिविरों का सफल आयोजन हो चुका है, जिनमें हर शिविर में करीब ५० से ३०० विद्यार्थियों ने लाभ लिया। साथ ही विदेशों में न्यूजर्सी, कैलिफोर्निया, टेनेसी आदि विभिन्न स्थानों में भी शिविर हुए। विद्यार्थियों को हँसते-खेलते शारीरिक स्वास्थ्य एवं बौद्धिक विकास की कुंजियों के साथ पूज्य बापूजी के सत्संग द्वारा नैतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति का ज्ञान प्राप्त हुआ। इसके अलावा देश के विभिन्न राज्यों के विद्यालयों में सतत जारी 'योग व उच्च संस्कार शिक्षा कार्यक्रमों' से असंख्य विद्यार्थी सर्वांगीण विकास की युक्तियाँ पा के उन्नत हो रहे हैं। पूज्य बापूजी एवं आश्रम के खिलाफ षड्यंत्र के तहत घृणित दुष्प्रचार किये जाने के बावजूद भी इस वर्ष विद्यार्थी शिविरों एवं संस्कार शिक्षा कार्यक्रमों द्वारा लाभान्वित होनेवाले विद्यार्थियों की संख्या हर वर्ष की अपेक्षा और बढ़ गयी है।

देश-विदेश में हुए सैकड़ों 'विद्यार्थी उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविरों' की कुछ झलकियाँ

नैशविले (टेनेसी, यूएसए)

कैलिफोर्निया (यूएसए)

सागर (म.प्र.)

तलवाड़ा (पंजाब)

उज्जैन (म.प्र.)

कोरबा (छ.ग.)

करनाल (हरि.)

जालंधर (पंजाब)

हाँसी (हरि.)

नागपुर (महा.)

तुमड़ीबोड, जि. राजनांदगाँव (छ.ग.)

खंडवा (म.प्र.)

कातरो, जि. दुर्ग (छ.ग.)

मऊ (उ.प्र.)

जानकीपुरम-लखनऊ

हैदराबाद

फरीदाबाद (हरि.)

नांदेड़ (महा.)

कोलकाता

बालीमेला, जि. मालकानगिरी (ओड़िशा)

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org देखें।

ऋषि प्रसाद जयंती : १२ जुलाई

सुप्रचार करते मेरे प्यारे साधक

- पूज्य बापूजी

कुप्रचार के युग में सुप्रचार करने का साहस लल्लू-पंजू का नहीं होता है। लोगों को भगवान और संत-वाणी से जोड़ना यह अपने-आपमें बड़ी भारी सेवा है। 'ऋषि प्रसाद' और 'ऋषि दर्शन' के सदस्य बनानेवाले मेरे साधक-साधिकाएँ दृढ़ संकल्पवान, दृढ़ निष्ठावान हैं। जैसे बापू अपने गुरुकार्य में दृढ़ रहे, ऐसे ही बापू के बच्चे, नहीं रहते कच्चे ! (पढ़ें पृष्ठ २६)